मेहनतके मारे शराब अपना रङ्ग दिखाने लगी। बस मैंने पेशाब की धार बांध दी। फिर क्या था? तीनही मिनटमें सारी आग बुझ गई। ईश्वरकी अनुकम्पासे वह सुन्दर राजमहल जो न जाने कितने दिनोंमें बना होगा। जलनेसे बच गया।

भोर हो चुका था। महाराजसे बिना मिलेही मैं अपने डेरे पर वापस आया। इतनी बड़ी खैरख्वाही करने पर भी तबीयत खटकेमें थी। न जाने मेरे लिये क्या हुक्म हो। आईनमें है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाब करेगा उसे चाहे वह कोई क्यों न हो फांसी दी जायगी। देखें महाराज मेरे साथ कैसे पेश आते हैं! महाराजने मेरे पास एक चिट्ठी भेजी पढ़ कर कुछ खुशी हुई। उसमें लिखा था "तुम्हारा अपराध क्षमा करनेके लिये मैं प्रधान विचारकसे कह दूंगा।" परन्तु भोंड़े भाग्यके कारण आज तक अपराध क्षमा नहीं हुआ। मुझे यह भी टोह लगी कि महारानीको मेरी इस कार्रवाईसे बहुत घृणा होगई है। वह अपना डेरा डण्डा उठा कर दूसरे मकानमें चली गई हैं। जिस मकानमें आग लगी थी उसकी अगर मरम्मत भी हो तो भी वह उसमें अब नहीं रहेंगी। उन्होंने यह प्रतिज्ञा भी करली है कि जिसने इस घरको अपवित्र किया है उसे वह अवश्य मजा चखावेंगी।

नवम परिच्छेद।

यद्यपि मैं चाहता हूं कि इस देशका सविस्तर वर्णन किसी दूसरी पोथीके लिये उठा रक्खूं तथापि अपने मन चले पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ यहां पर कुछ साधारण बातें लिखता हूं। यहांके निवासी छः इञ्चसे कुछही कम ऊंचे होते हैं। बस इसी हिसाबसे अन्यान्य जीवजन्तु और पेड़ पतोंकी उंचाई समझ लीजिये। अगर न समझ सकते हों तो ये नमूने हाजिर हैं—बड़े बड़े घोड़े और साढ़ोंकी ऊंचाई पांच इञ्चके भीतर है। भेंड़ डेढ़ इञ्चसे कुछ कम या ज्यादे ऊंची होती है। राजहंस गौरैयाके बराबर होता है और छोटे छोटे कीड़े मकोड़े तो मेरे दृष्टिगोचरही नही होते थे। पर लिलीपटी तो

मजेमें देख सकते हैं। ईश्वरकी लीला अपरम्पार है! ये लोग निकटकी छोटीसे छोटी चीजको भी मजेमें देख सकते हैं पर दूरकी नहीं। एकबार मैंने अपनी आखोंसे एक रसोइये को लवा पत्तीकी खाल खेंचते देखा है। यह मक्खीके बराबर था। एक बालिकाको सुईमें रेशमका डोरा पिरोते देखा है। परन्तु मेरे लिये ये सुई डोरे दोनोंही अदृश्य थे। सबसे ऊंचे पेड़ सात फुटके होते हैं। सरकारी बागके ऊंचेसे ऊंचे वृक्षोंकी फुनगियां मैं योंहीं छू लेता था। बाकी शाकपात भी इसी परिमाणके थे। उनकी ऊंचाई आदिका अनुमान पाठक स्वयं करलें।

बहुत थोड़े शब्दोंमें मैं इनके लिखने पढ़ने की बात अभी कहूँगा। यहां बहुत दिनोंसे विद्याकी अच्छी चर्चा है। लेकिन इन लोगोंके लिखनेका ढंग निरालाही है। ये बाईं ओरसे नहीं लिखते, न मुसलमानोंकी तरह दाईं ओरसे लिखते और न चीना लोगोंकी तरह ऊपरसे नीचेकी तरफ लिखते हैं। ये लिखते हैं तिरछा विलायती बीबियोंकी तरह कागजके एक कोनेसे दूसरे कोने तक।

यहांवाले मुर्देको गाड़ते हैं लेकिन उसका सिर नीचे और पैर ऊपर करके। इन लोगोंका विश्वास है कि ग्यारह हजार चन्द्रमाके बाद मुर्दे सब उठ खड़े होंगे और यह पृथिवी भी जो इनके ख्यालसे चपटी है उलट जायगी यानी नीचेका हिस्सा ऊपर और ऊपरका नीचे होजायगा। तब उठनेके समय मुर्दोंको खड़े होनेकी भी तकलीफ उठानी नहीं पड़ेगी। वे सब पहलेहीसे तय्यार खड़े हैं। पढ़े लिखोंका इस फूहर मत पर विश्वास नहीं है किन्तु यहां यह रीति अबतक प्रचलित है।

यहांके कुछ कानून तथा रीति व्यवहार बड़े विलक्षण हैं। अगर ये हमारे देशके कानून और रीति व्यवहारके ठीक उलटे न होते मैं अवश्य इनका प्रतिपादन करता। सिर्फ यही नहीं उन्हें काममें लानेके लिये मन भी दौड़ाता। पहला जो मैं लिखता हूं

मुकद्दमों की खबर देनेवालों अर्थात् भेदियोंके बारेमें है। सरकारके विरुद्ध जितने अपराध हैं उनकी बड़ी कड़ी सजा है। लेकिन अगर अपराधी विचारालयमें उपस्थित होकर अपनेको निर्दोष सिद्ध कर दे तो भेदिये की जान बड़े बुरे तौरसे ली जाती है। सिर्फ यही नहीं उसका सब मालमता और जमीन जायदाद बेच कर अपराधी को उसके खर्चका चौगुना रुपया उसके कष्ट और परिश्रमके बदले दिया जाता है। अगर कमी हुई तो सरकारी खजानेसे वह पूरी कर दी जाती है। महाराज उसकी बेकसूरीका ढिंढोरा सारे शहरमें पिटवादेते हैं और उसका बहुत आदर सम्मान करते हैं।

यहां चोरीकी अपेक्षा जुआचोरी भारी कसूर समझा जाता है। इसी लिये जुआचोरोंको फांसी देनेमें यहांवाले कभी नहीं चूकते। इनका कथन है कि जरा सावधान होनेहीसे चोरोंसे उबार हो सकता है किन्तु जुआचोरोंसे सच्चोंकी रक्षा नहीं। उधार और लेने देने बिना दुकानदारी चल नहीं सकती लेकिन जहां जुआचोरी जारी है और जहां जुआचोरीकी सजा कानूनमें नहीं है वहां बेचारे सच्चे दुकानदारोंहीका दिवाला निकलता है और जुआचोर, ठग मजेमें माल उड़ाते हैं। मुझे याद है, एक दिन जब मैंने महाजसे एक अपराधी की जिसने अपने मालिक का बहुत साधन गबन किया था शिफारिश करके कहा कि यह तो केवल विश्वासघात है; इस साधारण अपराधके लिये फांसी देना ठीक नहीं। इसपर महाराज बोले "आश्चर्य्य है! ऐसे बड़े घृणित अपराधको आप साधारण बताते हैं।" महाराजकी इस बातका जवाब मुझे कुछ न सूझा। केवल इतना कहके मैं चुप होगया कि देसा चाल और कुला व्यवहार। पर सचमुच उस दिन मैं महाराजके सामने बहुतही लज्जित हुआ।

यद्यपि हम लोग बराबर कहा करते हैं कि इनाम और सजा यही दो चूल हैं जिनपर राजशासनके किवाड़ घूमते हैं लेकिन इस कहावतको पूरा कर दिखाने वाले लिलीपटके सिवा

दूसरा राज्य इस संसारमें नहीं है। यहां जो कोई तिहत्तर चन्द्र तक कानूनके अनुसार चलता है सो पूरा सबूत देने पर हैसियतके मुताबिक सरकारसे इनाम पाता है। इस कामके लिये अलग एक फण्ड खुला हुआ है इसके सिवाय उसे "राज्यव्यवस्थानुसारी" की पदवी मिलती है जिसे वह अपने नामके साथ जोड़ लेता है पर यह पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चलती। जब मैंने कहा कि हमारे देशमें केवल सजाहीका कानून है इनामका नहीं तो वे सब हंसने लगे और बोले कि आप लोगोंका कानून भद्दा है। लिलीपटके न्यायालयोंमें न्यायकी एक एक मूर्त्ति स्थापित है जिसके छः नेत्र—दो आगे दो पीछे और दो दोनों बगलमें—और दो हाथ हैं—दहिने हाथमें अशर्फियोंका खुला हुआ तोड़ा और बांयेंमें म्यान सहित तलवार। तात्पर्य्य यह कि न्याय सावधान है, सब ओर देखता है और वह दण्ड देनेकी अपेक्षा पारितोषिक देना श्रेय सकझता है।

निपुणतासे बढ़ कर यहां सदाचरणका आदर है। इसीलिये राजकीय पद निर्व्वाचनके समय लोगोंका ध्यान निपुणताकी अपेक्षा सदाचारकी ओर अधिक रहता है। मनुष्य मात्रको राजाकी नितान्त आवश्यकता है। यहां वालोंका विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करनेकी योग्यता रखता है। परमात्माने साधारण राजकाजको कोई गुप्त रहस्य नहीं बनाया है कि केवल प्रतिभाशाली पुरुषही उसे समझें, और न कभी उसकी यह इच्छा है। ऐसे ऊंची बुद्धिवाले तो एक शताब्दीमें तीनही उत्पन्न होते हैं। ऐसी अवस्थामें केवल ऊंची बुद्धिवालेको सरकारी नौकरी देना कदापि युक्ति युक्त नहीं है। सत्य, न्याय, संयमादि गुण मनुष्यके अधीन हैं। इन गुणोंके साधनके सङ्ग यदि बहुदर्शिता और सदाशयतका योग्य होजाय तो प्रत्येक मनुष्य, उन कामोंको छोड़ कर जिनमें विद्या बुद्धिकी दरकार है, अपने देशकी सेवा मजेमें कर सकता है। यहां वाले कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य सर्व्वगुण सम्पन्न होने पर भी सदाचारी नहीं है तोभू ल कर भी उसके हाथ

में राजकाज नहीं सौंपना चाहिये। ऐसा करनेसे महा अनर्थ होगा। सदाचारी पुरुष अज्ञानतासे अगर कोई चूक कर भी बैठे तो उससे सर्वसाधारणकी उतनी हानि नहीं होगी जितनी कि उस ऊंची बुद्धिवालेसे, जो जान बूझ कर पाप करता है और जो पाप करनेकी, पाप बढ़ानेकी और अपने पापोंको छिपानेकी अच्छी तरकीब जानता है।

इसी प्रकारसे जो नास्तिक है यानी जो ईश्वरको नहीं मानता वह भी राजकीय पद पानेके योग्य नहीं है। क्योंकि राजा परमेश्वरका प्रतिनिधि स्वरूप है और राजकर्म्मचारी राजाके प्रतिनिधि हैं। यहां वालोंका कथन है कि जो अपने स्वामीहीको नहीं मानता उसे राजकर्म्मचारी बनाना महाभूलही नहीं वरन् वज्र मूर्खता है!

जो कुछ मैं कह चुका या अब जो कुछ कहूंगा सो सब पुराने जमानेकी बातें हैं। आजकलकी लज्जाजनक बातें मैं न कहूंगा। अधःपतित होना मनुष्य मात्रका स्वभाव है। लिलीपटवाले भी इसी स्वभावके फेरमें पड़ कर अपनी पुरानी चालढाल छोड़ बैठे हैं। रस्सों पर नाच कर भारी भारी ओहदे पाना—छड़ियों पर कूद कर विख्यात होना इत्यादि क्या अधःपतनका नमूना नहीं ? इन बुरी बातोंकी नींव डालनेवाले हमारे महाराजके दादाही थे। अब ईर्षा, द्वेष, विरोध और धड़ाबन्दीके प्रतापसे इन सब बुराइयोंकी पूरी उन्नति होचली है।

कृतघ्नताको यहां लोग बड़ा भारी अपराध समझते हैं। वह कहते हैं कि जो अपने भलाई करनेवालेकी बुराई करता है वह सब संसारका बैरी है क्योंकि जब वह भलाई करनेवालेके साथ बुराई करता है तब जिसने उसके साथ कुछ भी नेकी नहीं कीहै उसके साथ बुराई करनेसे वह दुष्ट कब बाज आने लगा। ? इस लिये कृतघ्नोंका जीवित रहना ठीक नहीं। चट पट उनको इति श्री करदेना चाहिये।

यहां माता पिता और पुत्रका परस्पर व्यवहार हम लोगोंके व्यवहारसे बिलकुल विलक्षण है। स्त्री पुरुषोंका परस्पर मिलन स्वाभाविक है। लिलीपट लोगोंका मत है कि और और जानवरों की तरह नर नारी भी कामाग्नि बुतानेके लिये सम्भोग करती हैं। इसी सम्भोगका नतीजा है सन्तान। सन्तानके प्रति माता पिता का स्नेह भी स्वाभाविक है। पिताने जन्म दिया है और माताने गर्भमें धारण किया है बस इतनेहीके लिये पुत्र सदा उनकी सेवकाई नहीं कर सकता और न जन्म भर उनके उपकारसे दबा रहेगा। इसी प्रकारकी युक्तियां दिखलाते हुए लिलीपटके लोग कहतेहैं कि बालक बालिकाओंकी शिक्षा माता पिताके भरोसे न छोड़ना चाहिये। इसी हेतु हर एक शहरमें एक ऐसी जगह बनी है जहां लड़के लड़कियां पाली पोसी और सिखाई पढ़ाई जातीं हैं। बस थोड़ीं दीन दरीद्र और मजूरोंके सिवा सब किसीको अपने छोटे छोटे बच्चे भेजने पड़ते हैं। यहां ऐसे स्कूल कई प्रकारके हैं जिनमें भांति भांतिकी विद्यायें पढ़ाई जातीं हैं। लड़के और लड़कियोंके लिये अलग अलग स्कूल हैं। स्कूलोंमें ऐसे ऐसे माष्टर हैं जो लड़के और लड़कियोंको उनके माता पिताकी अवस्थाके उपयुक्त बना देते हैं तथा उनकी योग्यता और रुचिके अनुसार उन्हें पढ़ा भी देते हैं।

पहले मैं लड़कोंके स्कूलकी तरफ झुकता हूं। बड़े आदमियोंके अथवा अच्छे कुलके लड़के जिन विद्यालयोंमें भेजे जातेहैं उनमें बड़े बड़े गम्भीर और विद्वान अध्यापक रहते हैं। इनके अतिरिक्त कई सहकारी अध्यापक भी रहते हैं। लड़कोंका खाना कपड़ा बहुत साफ सुथरा और सादा होता है। इन्हें मर्य्यादा, न्याय साहस नम्रता, दया, धर्म्म और स्वदेशानुरागका तत्व पढ़ाया जाता है। केवल भोजन और शयनके समय उनको छुट्टी रहती है नहीं तो बराबर उन्हें कुछ न कुछ करनाही पड़ता है। खाने और सोनेके लिये भी समय बहुत कम दिया जाता है। कसरत और खेलकूदके वास्ते दो दण्टे नियत हैं। चार बरस तकके लड़कोंको चाकर

ही कपड़े पहनाते हैं लेकिन इसके बाद उन्हें (चाहे वह किसीके लड़के हों) अपने हाथोंसे कपड़े पहनने पड़ते हैं। सेवा टहलका काम बूढ़ी बूढ़ी दासियां करती हैं। लड़के नौकरोंके साथ बात करने नहीं पाते पर खेलकी जगह जा सकते हैं। एक अध्यापक वा सहकारी अध्यापक साथमें जरूर रहते हैं। इसी लिये लड़के उन कुसंस्कारों और बुरे व्यसनोंसे साफ बच जाते हैं जिनमें हमारे देशके लड़के प्रायः लिप्त रहते हैं। मा बाप सालमें दोही बार उन्हें देखने पातेहैं सो भी एक घण्टेसे ज्यादे ठहर नहीं सकते। आनेके समय वह लड़कोंको चूम सकते हैं परन्तु उनसे काना फूसी नहीं कर सकते, न कुछ प्यारकी बातें कह सकते और न खिलौना और मिठाई वगैरह दे सकते हैं। इन सबकी निगरानीके लिये एक माष्टर वहां बराबर खड़ा रहता है। अगर किसीने स्कूलकी फीस देनेमें गड़बड़ीकी तो सरकारी कर्म्मचारी तुरत उसे वसूल कर लेते हैं।

मामूली गृहस्थ, कोठीवाल, सौदागर और कारीगरोंके बालकों के लिये अलग स्कूल हैं। उनमें भी इसी ढङ्गसे शिक्षा दी जाती है और प्रबन्ध भी सब ऐसेही हैं तथापि कुछ अन्तर है। यह अन्तर केवल दरजेके ख्यालसे है। जो व्यापार सीखनेके वास्ते कहीं उम्मीदवार हुआ चाहते हैं सो ग्यारह बरसके होने पर छुट्टी पाते हैं लेकिन जो नहीं चाहते उन्हें पन्द्रहवें बरस तक रहना पड़ता है।

कन्या पाठशालाओंके भी यही सब नियम हैं। लड़के जैसे पढ़ते हैं बड़े आदमियोंकी लड़कियां भी वैसेही पढ़ती हैं। भेद केवल इतनाही है कि इन्हें दासियां माष्टरके सामने कपड़े पहनाती हैं। पांच वर्षके पश्चात् वह आपही पहन लेती हैं। अगर किसी दासी का किसी कन्याके सामने किसी तरहकी भयानक कहानियां, भूतोंके किस्से या झूठी गप्पें कहना साबित होजाय तो चाबुक मार कर वह शहरमें तीन बार घुमाई जाती है। इसके बाद वह एक महीना कैदकी जाती है। फिर आजन्मके लिये नगरसे बाहर

निकाल दी जाती है। इसी हेतु यहांकी युवतियां डरपोक और बेवकूफ होनेसे उतनाही लजाती हैं जितना कि पुरुष। यह गहनोंसे घिन करती हैं मगर साफ सुथरी और सादी पोशाक पसन्द करती हैं। इनकी कसरतें निपट भारीही नहीं होतीं हैं। विद्याके साथ साथ इन्हें गृहस्थके काम भी सिखाए जाते हैं। लिलीपटियोंका सिद्धान्त है कि गुणियोंकी स्त्रियां भी गुणवती होनी चाहियें क्योंकि वह सदा युवतीही न बनी रहेंगी। जब लड़कियां बारह बरसकी होती हैं तब उनके मा बाप माष्टरोंको धन्यवाद देते हुए उन्हें घर लेआते हैं। यही उमर यहां व्याहकी भी है। स्कूलसे बिदा होनेके समय वह सब अपनी सहेलियोंसे गले मिल कर रोती भी हैं।

नीच जातिकी लड़कियोंके लिये भी स्कूल है। यहां उन्हें उन्हींकी जातिके अनुसार छोटे छोटे काम सिखाये जातेहैं। जो दूसरी ठौर काम सीखना चाहे उसे सात बरसकी उमरमें फुरसत मिल जाती है लेकिन शेषको ग्यारह वर्षकी उमरमें।

नीच जातिवालोंको जिनके बेटे और बेटियां स्कूलमें हैं सालाना तलबके अलावे जो बहुतही कम है, विद्यालयके कोठारीके पास महीने महीने अपनी आमदनीमेंसे कुछ थोड़ासा बेटी बेटोंके लिये जमा करना पड़ता है। इसी वास्ते सब किसीका खर्च आईनके मुताबिक बंधा हुआ है। लिलीपटी लोग कहते हैं कि कामेच्छाके बशीभूत होकर पुत्रोत्पादन करना और उसके भरण पोषणका सर्वसाधारण पर छोड़ देना बड़ी लज्जाकी बात है। जगतमें इससे बढ़के अन्याय और कुछ नहीं है। बड़े आदमी अपने अपने बच्चोंके लिये अपनी अवस्थानुसार कुछ रुपये जमा करा देते हैं। यह सब रुपये बड़े हिसाबसे खर्च किये जाते हैं।

कुटीरबासी और मजदूर अपने अपने लड़कोंको घरहीमें रखते हैं। इनका काम जमीन जोतना और आबाद करना है। इस लिये इनके पढ़ानेसे सर्वसाधारणको कुछ फायदा नहीं। बूढ़े और

बीमारोंको अनाथालयमें खानेके लिये मिलता है। भीख मांगने का रोजगार यहां कोई जानताही नहीं है।

दशम परिच्छेद।

अब कुछ मेरा हाल सुनिये। लिलीपटमें मैं कुल नौ महीने तेरह दिन रहा था। सरकारी जङ्गलसे लकड़ी लाकर मैंने अपने आरामके लिये एक मेज और एक कुर्सी बनाली थी। ऐसा मत समझिये कि मैं यह सब काम भी खूब जानता हूं। दो सौ दर्जियोंने मिल कर मेरे लिये कमीज और बिछौने सिये थे। यहां तीन इञ्च चौड़े और तीन फुट लम्बे कपड़े होते हैं। मोटेसे मोटे कपड़े मेरे वास्ते मंगवाये गये। उनको कई तह करनेसे मेरा काम चला। दर्जी जब मेरा बदन नापता तब मैं लेट जाता। एक दर्जी तो गर्दनके पास और एक घुटनेके पास खड़े होते। दोनोंके हाथमें रस्सीका एक एक सिरा रहता था। तीसरा एक इञ्च लम्बे औजार से उस रस्सीको नापता। फिर दाहिना अंगूठा नाप कर छुट्टी। बस इतनेहीसे सब अङ्गोंकी नाप होजाती है। जरा हिसाब सुनिये—अंगूठेका घेरा नाप कर दूना करनेसे कलाईका घेरा निकलताहै। फिर इसी तरह कमर और गर्दनका भी जानिये। मैंने अपनी कमीज दिखलाई तो उन्होंने ठीक वैसीही एक बना दी। तीनसौ दर्जियोंने मेरी पोशाक तैयारकी थी। इनके नापने का ढङ्ग न्यारा था। मैं घुटनोंके बल बैठ गया। उन्होंने गर्दन तक सीढ़ी लगाई। फिर उस पर चढ़के एकने मेरे पट्टेसे जमीन तक साहुलकी तरह एक डोरी गिराई। यही हुई मेरे कोटकी लम्बाई। मैंने कमर और बांह आपही नाप दिखाई। जब सब कपड़े तैयार होगये तो वह जोड़ पर जोड़ लगानेसे ङ्गुदड़ीकी तरह मालूम पड़ते थे। यह सब मेरेही डेरे पर बनेथे क्योंकि वहां इतनी बड़ी ठौर और कहीं न थी जहां वह सब समाते।

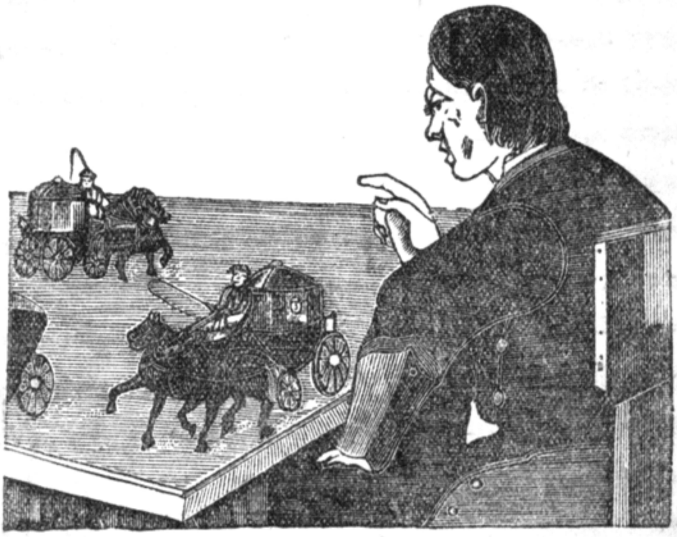
मेरी रसोई बनानेके लिये तीनसौ बावरचीथे मेरे डेरेके पासही

कई छोटे छोटे झोंपड़े बने थे उनमें वह सब रसोई भी बनाते और बाल बच्चोंको लेकर रहते भी थे। मैं बीस खानसामालोगोंको उठा कर मेज पर रख लेता और बाकी बीसे ज्यादे हाथोंमें मांस की रकाबियां तथा शराबके पीपे लिये नीचे खड़े रहते। जैसे कुए से पानी खेंचा जाता है वैसेही ऊपरवाले खानसामा सब चीजोंको डोरीके सहारे मेज पर खेंच लेते थे। उनकी एक रकाबी मेरा एक निवाला होता और पीपा तो एकही घूंट था। यहांके पेरू और राजहंस छोटे होने पर भी स्वादमें बहुत बड़े थे। इनको भी मैं एकही कौर करता। छोटी छोटी चिड़ियां तो बीस बीस तीस तीस एक साथही छुरीकी नोंक पर धरके उड़ा जाताथा।

मेरे रहनेका तरीका सुन कर महाराजको बहुतही आश्चर्य हुआ। उन्होंने सपरिवार मेरे साथ भोजन करना चाहा। मैंने भी उनकी आज्ञा माथे चढ़ाई। आखिर महाराज एक दिन महारानी, राजकुमार और राजकुमारी समेत मेरे डेरे पर पधारे। मैंने उन सबको उठा कर कुर्सियों पर जो मेरे सामने मेज पर रक्खीं थीं बैठाया। रक्षकोंको भी उठा कर मेज पर रखलिया। वह सब कायदेसे महाराजको घेर कर खड़े होगये। फ्लिमनप खजानची भी अपने उजले समाजके साथ आपहुंचा था। वह अकसर मेरी ओर देख कर मुंह विचकाता पर मैं उधर ध्यानही नहीं देताथा। उनका आश्चर्य बढ़ानेके लिये रोजके बनिसबत उस दिन मैंने और ज्यादे खाया। कई गुप्त कारणोंसे मुझे मालूम हो गया कि महाराजके यहां पधारनेसे खजानची साहबको मेरी चुगली करनेका अच्छा मौका हाथ लगा। वह बहुत दिनोंसे इसी फिराकमें थे। ईश्वरकी दयासे आज वह कामना पूरी होगई। ऊपरसे तो वह बहुत चिकनी चुपड़ी बातें करता पर भीतरसे मुझे देखकर कुढ़ताथा। उसने मौका पाकर एकान्तमें महाराजसे कहा कि खजाना खाली होता जाता है—अब ज्यादे सूद पर रुपये कर्ज लेने पड़ेंगे। सरकारी हुण्डी नौ रुपये सैकड़े बट्टेसे कममें नहीं

चलेगी। नर पर्व्वतके कारण सरकारी खजानेसे पन्द्रह लाख रुपये खर्च होचुके। अब जितना जल्दी नर पर्व्वत यहांसे दूरहो अच्छाहै।

इधर दूसराही गुल खिला। खजानची साहबको अपनी स्त्री के सतीत्व पर सन्देह हुआ उन्हें खबर लगी कि उनकी स्त्री मुझ पर आशिक है। सिर्फ यही नहीं बल्कि वह छिप कर मेरे पास एक दिन आई भी थी। जहां सुनो वहां यही चर्चा थी। खजानची साहबका क्या पूछना है ? वह तो इन बातोंको सुनतेही आग बबूला होगये। लेकिन मैं कसम खाके कहता हूं कि यह बात बिलकुल झूठ और बेजड़ थी। वह पतिव्रता थी। वह मुझे भाई करके मानती थी। यह बात जरूर है कि वह मेरे पास अकसर आती थी लेकिन छिप कर नहीं—अकेली नहीं। उसके सङ्ग तीन औरतें आती थीं—एक तो उसकी बहन, दूसरी बेटी और तीसरी सहेली। और भी बहुतसी स्त्रियां इसी तरह बराबर मेरे यहां आया करती थीं। मेरे नौकर सब इस बातको भली भांति जानते थे। वहां कभी ऐसी कोई गाड़ीही न आई जिसके सवारोंको वह न जानते या पहचानते हों। जब कोई मुझसे मिलने आता तो दरवान मुझे खबर देता। मैं बाहर जाकर गाड़ी घोड़ा समेत उनको उठा लाता और मेज पर रख देता। एक एक दफे मेज पर चार चार गाड़ियां रहतीं थीं। मैं सामने कुर्सी लगा बैठ जाता। जब तक मैं एक टोलसे बात चीत करता तब तक कोचवान दूसरोंको धीरे धीरे मेजही पर चक्कर खिलाता। मेजके चारोंओर पांच इञ्च की कोर लगा दी थी जिसमें कोई गिर न पड़े। रोज दोपहरको मैं इसी तरह गप्प शप्पमें समय बिताता था। मैं खजानची और उनके जासूसोंको चुनौती देता हूं वह आकर कहें कि रेलड्रेसलके सिवाय किसके साथ मैंने गुप्त भेंटकी है? वह भी महाराजकी आज्ञासे आया था जिसका हाल मैं आगे लिख चुका हूं। अगर एक पतिव्रता स्त्रीके नाममें धब्बा लगनेका डर न होता तो मैं इतना कदापि न बकता। अपने बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है।



नं० ६

जबतक मैं एक टोलसे बातचीत करता तबतक कोचमान
दूसरोंको धीरे धीरे मेजहो पर चक्कर खिलाता।

पृष्ठ ५२

खजानचीसे मेरा एक दर्जा ऊंचा है। वह "ग्लम ग्लम" ही है और मैं हूं "नर्डक"। ग्लम ग्लम और नर्डकमें उतनाही अन्तर है जितना कि राय बहादुर और राजा बहादुरमें। चाहे राजकाजमें उसका अधिकार ज्यादे हो परन्तु उपाधि मेरीही बड़ी थी। इस झूठी खबरको सुन कर खजानचीने अपनी स्त्रीसे मन मोटा कर लिया और मुझसे तो बाघ बकरीकासा बैर ठाना। कुछ दिनके बाद स्त्रीसे तो मेल होगया पर मुझसे वह टेढ़ाही रहा। नतीजा यह हुआ कि उसने कान भरते भरते महाराजका भी दिल मेरी ओर से फेर दिया। महाराज उसे बहुत चाहते थे। जो वह कहता वही करते थे। सच पूछो तो महाराज उसके हाथके खिलौने थे। उसकी विरुद्ध वह एक तिनका भी नहीं उठा सकते थे।

एकादश परिच्छेद।

इस देशको परित्याग करनेका वृत्तान्त कहनेसे पहले पाठकों को एक गुप्त षड़यन्त्रकी कथा सुनाना उचित समझता हूं। मेरे प्राण लेनेके लिये यह दो महीनेसे चल रहा था।

मैं गरीब हूं। कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं और उसके भेदोंहीको जानता हूं। किताबोंमें और किस्से कहानि[illegible] बड़े बड़े राजा महाराजा और उनके मन्त्रियोंकी विलक्षण प्र[illegible]तका हाल पढ़ा और सुना है। परन्तु मुझे यह सपनेमें भी ख्याल न था कि मैं भी एक दूर देशमें आकर ऐसीही प्रकृतिके फेरमें पडूंगा।

महाराजसे आज्ञा लेकर जब मैं ब्लेफस्कू जानेकी तैयारी कर रहा था दरबारका एक बड़ा नामी गरामी आदमी रातके समय पालकीमें बैठ कर बड़ी गुप्त रीतिसे मेरे पास आया। एक बार जब महाराज इससे असन्तुष्ट होगये थे मैंने बहुत कह सुनकर इसका अपराध क्षमा करवा दिया था। इसने एकान्तमें कुछ बात चीत करनेकी इच्छा प्रगट की। कहारोंको बिदा करके उसको पालकी समेत पाकेटमें धर लिया। अपने विश्वासी नौकरसे कह दिया अगर

कोई आवे तो कह देना कि आज जी अच्छा नहीं है—भीतर सोते हैं फिर अपने कमरेकी किवाड़ी मून्द कुर्सी पर आवेठा और पालकीको दस्तूरके मुताविक मेज पर रख दिया। सलाम बन्दगी होनेके बाद उसने यों कहना शुरू किया "तुम्हें जान लेना चाहिये कि इधर कई कमीटियां तुम्हारे बारेमें बड़े गुप्त तौरसे हुई हैं। आखिर आज दो दिन हुए महाराजने भी अपनी राय दे दी है। तुम्हें यह मालूमही है कि जबसे तुम यहां आये बलगुलाम तुम्हारा जानी दुश्मन बन बैठा है। इस दुश्मनीका असल सबब तो मैं कुछ नहीं जानता पर हां, जबसे तुम शत्रुओंके जहाजोंको छीन लाये हो तबसे वह तुमसे और भी कुढ़ने लगा है। तुम्हारे इस कामसे उसने बहुत नीचा देखा है। खजानची भी अपनी स्त्रीके कारण तुम्हारा परम शत्रु बन गया है। इन दोनोंने मिल करके तुम्हारे ऊपर राज-विद्रोह आदि बड़े बड़े दोष लगाये हैं। इसमें और भी कई आदमी शामिल हैं। सब दोषोंकी सूची भी बनकर तैयार होगई है।"

इस भूमिकाको सुनतेही मेरे होश उड़ गये। मैं कुछ कहने के लिये मुंह खोलनाही चाहता था कि वह फिर कहने लगा "जरा चुप रहो—पहले मेरी बात पूरी होने दो। मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूं। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। इसीसे अपनी जान जोखोंमें डाल कर सब बातोंका पता लगाता हुआ तुम्हारे पास आया हूं। उस सूचीकी नकल भी लाया हूं। मैं तुम्हारे लिये अपनी जान भी देनेको तैयार हूं।" इतना कहके उसने उसे पढ़ कर सुनाया। उसमें यह लिखा हुआ था।

नर पर्व्वतकी दोषावली।

दोष नं० १

महाराज कलीन डेफ़र प्लूनके समयमें कानून पास हुआ है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाव करेगा सो विद्रोहियोंकी भांति कड़ी सजा पावेगा। नरपर्व्वतने इस कानूनके वरखिलाफ आग बुझानेके बहानेसे महारानीके महलमें जान बूझ कर पेशाव किया है।

दोष नं० २

नर पर्व्वतके बुफस्कूसे जङ्गी जहाज छीन लाने पर महाराजने बाकी जहाजोंको लाने, उस राज्यको अपने राज्यमें मिलाने और बिद्रोहियोंको नेस्तनाबूद करनेके लिये कहा तो नर पर्व्वतने विद्रोहियोंकी तरह महाराजकी आज्ञा उल्लङ्घन करके कहा कि स्वाधीन और निर्दोष मनुष्योंकी स्वाधीनता तथा प्राण नष्ट नहीं करूंगा ये सब उसकी चालबाजियां हैं।

दोष नं० ३

बुफस्कू राज्यसे दूतगण सन्धिके लिये आये तो नर पर्व्वत विश्वासघात करके उनसे मिला और उनका आदर सत्कार किया। यद्यपि इसको मालूम था कि बुफस्कूके महाराज कुछ दिन हुए हमारे प्रगट शत्रु थे और उनसे युद्ध भी ठन चुका है तथापि यह उन्हींकी तरफदारी करता था।

दोष नं० ४

"दो रोज पहले जिस राज्यसे हमको शत्रुता थी—जिस राज्यसे घोर संग्राम हुआ था उसी राज्यमें ऊपर कहा हुआ नर पर्व्वत महाराजकी केवल मौखिक आज्ञा (जवानी हुक्म) के भरोसे जाया चाहता है। यह वहांके महाराजसे जाकर मिलेगा और जरूर उनकी सब तरहसे मदद करेगा। यह कार्य्य महा विद्रोहका है।"

यह सुनाकर वह फिर बोला "और भी बहुतसे दोष हैं। उनमें यह चारही मुख्य हैं जिनका केवल सार मात्र मैंने तुम्हें सुनाया है। जब महाराजके सामने यह कागज पेश किया गया तब वह उपकारोंको याद करके तुम्हारे कसूरोंको घटानेही की कोशिश बराबर करते थे। उनकी राय थी कि कुछ थोड़ीसी सजा करके तुम्हें छोड़ दें पर दुष्ट खजांची और बलगुलाम तुम्हारी जान लेने पर उतारु हैं। उन दोनों की राय है कि रातको तुम्हारे घरमें आग लगादी जाय जिसमें तुम उसीमें जल मरो या बीसहजार फौज तुम्हारे मुंह और हाथोंमें

बिषैले तीर मारे या तुम्हारे नौकरोंसे तुम्हारे कपड़े और बिछौने पर कोई जहरीला रस छिड़कवा दिया जाय जिसमें तुम जहरकी ज्वालासे अपने मासोंको आपही काटो और तड़प तड़प कर मर जाओ। उन लोगोंने इन बातों पर बहुत जोर दिया था। सब तुम्हारे विरुद्ध थे। परन्तु महाराज तुम्हारी जान लिया नहीं चाहते हैं। शेषमें सिकत्तर साहब बुलाए गये।

रेलड्रेसल हकीकतमें तुम्हारे पक्के दोस्त हैं। जब महाराजने उनकी राय पूछी तो उन्होंने कहा "बेशक नर पर्व्वतके कसूर बड़े भारी हैं। तोभी अभी दया करनेकी गुंजाइश है। दयालु होना महाराजोंका प्रधान गुण है और महाराजके इस गुणका सर्व्वत्र नाम भी है। नर पर्व्वतसे मुझे मित्रता है इस वास्ते चाहे मुझे कोई पक्षपाती कहले परन्तु जब श्रीमान्ने पूछा तो मैं भी दिल खोल कर वाजिबकी कहूंगा। अगर श्रीमान् नर पर्व्वतके उपकारों की तरफ ख्याल करके—अपनी दयालुताकी ओर हेर करके उसकी जान छोड़दें तो अच्छा है। इसके बदले उसकी आंखें दोनों निकलवा लेना चाहिये। ऐसा करनेसे न्याय भी होगा और सारे संसार में आपकी दयालुताका नाम भी होजायगा और श्रीमान्के मन्त्रियों का यश सर्व्वत्र फैल जायगा। आंख निकलवानेसे नर पर्व्वतकी ताकत ज्योंकी त्यों बनी रहेगी। समय पड़ने पर वह भी श्रीमान् की सेवा भी कर सकेगा। अन्धा होनेसे आदमी निशङ्क और साहसी होजाता है क्योंकि वह कुछ देखता नहीं है। और वास्तवमें आंख एक बड़ी भारी बला है। ब्लेफस्कूसे जहाज लानेके समय आंखों ने उसे बहुत बाधा दी थी। मन्त्रियोंकी आंखोंहीसे वह देखेगा, बड़े बड़े राजा महाराज भी ऐसाही करते हैं।

"रेलड्रेसलके इस प्रस्तावको सारी सभाने नापन्द किया। बलगुलाम चुप न रह सका। वह लाल पीला होकर बोल उठा "आश्चर्य है कि सिकत्तर साहब राजविद्रोही और विश्वासघाती की सुफारिश करते हैं। उपकार! यह उपकारही तो उसके अप-

राधका मूल कारण हैं! जिस आदमीने अपने पेशाबसे आग बुझाई है वही एक दिन पेशाबसे सारे महलको गारत भी कर सकता है। जो जहाजोंको खेंच लाया है वह नाखुश होकर उन जहाजोंको वापिस भी लेजा सकता है! और सचमुच वह दिलसे विपच्छियों का (बड़े सिरेको तरफसे अण्डा फोड़नेवालोंका) तरफदार है। विद्रोह पहले दिलहीमें पैदा होता है पीछे बाहर उभड़ता है सो विद्रोहियोंको जीता छोड़ना कभी उचित नहीं।

खजानचीने भी इसी बातको समर्थन करते हुए कहा "इस नर पर्व्वतके मारे तो सारा खजाना खाली होता जाता है। थोड़े दिनोंमें जो बचा है वह भी साफ होजायगा। फिर इसकी खुराक जुटानेमें बड़ी कठिनाई पड़ेगी। रेलड्रेसलने जो आंख निकलवाने की बात कही सो ठीक नहीं। उसके अन्धे होनेसे खुराकका खर्च और भी बढ़ जायगा। यह तो प्रत्यक्षही है कि चिड़िया अन्धी होनेसे ज्यादे खाती है और इसीसे जल्द मोटी होजाती है। महाराज और समूची सभा उसके दोषोंको भली भांति जानती है। उसको जरूर फांसी होना चाहिये।"

इतने पर भी महाराजकी इच्छा नथी कि तुम्हें फांसी दी जाय। उन्होंने कहा अगर अन्धा करना सबकी रायसे हलकी सजा है तो कोई दूसरी सजा तजवीज करना चाहिये। इस पर तुम्हारे मित्र रेलड्रेसलने फिर कहा 'अगर खुराकमें सच मुच इतना खर्च पड़ता है तो उसकी खुराक घटा देना चाहिये। थोड़े दिनोंमें दुबला होकर वह आप मर जायगा। जब दुबला होकर मरेगा तब उसकी लाश सड़ कर महामारी भी न फैला सकेगी क्योंकि तब उसकी देह आधी भी न रहेगी। पांच छः हजार आदमी उसके मांसको काट काटकर आसानीसे दूर फेंक आवेंगे। परन्तु उसकी स्मरण चिन्हकी भांति ;रखा जायगा जो पैदा होंगे वह देखेंगे और साश्चर्य्य करेंगे।

यों सिकत्तरके कहनेसे मामला निबट गया—तुम्हारी जान बची।

खुराक घटानेकी बात तो छिपाई गई लेकिन अन्धा करनेका हुक्म वहीं पर चढ़ गया है। बलगुलामने तुम्हारी जान लेनेके लिये बहुत सिर लड़ाया। महारानीका भी इसमें इशारा था। जबसे तुमने पेशाबसे आग बुझाई है तबसे वह तुमसे बहुत नाराज हैं।

परसों सिकत्तर साहब हुक्म लेकर तुम्हारे पास आवेंगे और सब कागज पत्र पढ़ कर तुम्हें सुनावेंगे। महाराजकी दयाका वर्णन करके अन्तिम आज्ञा सुना देंगे। तुम्हें बेउजर जमीनमें लेटना पड़ेगा तुम्हारी आंखोंकी पुतलियोंमें बहुत नुकीले तीर छोड़े जायगें। इसकी देख भालके लिये बीस सरकारी डाक्टर मुस्तैद रहेंगे।

"मुझे जो कुछ कहना था सो कह दिया। अब तुम जो उचित समझो सो करो। देरी करनेसे शायद मुझ पर लोग शक करें इस लिये अब मैं जाता हूं।"

इतना कह वह चलता हुआ और मैं दुःख और चिन्ताके चक्र में पकड़ कर अपनी सुध बुध खो बैठा।

वर्त्तमान महाराज और इनके मन्त्रियोंने एक नई रीति चलाई थी कि जब विचारक महाराजका क्रोध शान्त करने अथवा किसी मुंह लगेकी द्वेषाग्नि बुझानेके लिये प्राण दण्डकी व्यवस्था कर देता है तो महाराज भरी सभामें स्वयं अपनी विश्वविदित दयालुता और उदारता पर एक व्याख्यान देते हैं। राज्य भरमें यह व्याख्यान छापकर बांट दिया जाता है। प्रजाको इतना और कोई चीज नहीं दहलाती है जितना महाराजकी कृपाका कीर्तन। क्योंकि अकसर देखा गया है कि जितनी ज्यादे बड़ाई की जाती है सजा भी उतनीही निष्ठुरता और कड़ाईसे भरी होती है। तिस पर तुर्रा यह कि अपराधी बिलकुल निर्दोषही रहता है। लेकिन मैं जो कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं, अच्छे बुरेकी पहचान नहीं कर सकता विशेष कर महाराजकी इस आज्ञामें तो दयालुता और उदारताका लेशमात्र मुझे दिखाई

नहीं पड़ता है। मेरी समझसे तो यह सरल न होकर महाकठिन है। नाना प्रकारकी चिन्ताओंसे चित्त चञ्चल था। क्या करना चाहिये सो स्थिर न कर सकता था। कभी कभी सोचता कि अपराधोंको स्वीकार करलूं—महाराज दया करके छोड़ देंगे पर नहीं यह बात बिलकुल असम्भव है। जहां मेरे ऐसे ऐसे बध्य शत्रु मौजूद हैं वहां क्षमा कहां ? कभी सोचता क्या डर है ! इन तुच्छ जीवोंकी क्या गिनती है ? इन्हें तो मैं चुटकीसे मल दूं तो साफ होजाय छन भरमें समूचे राज्यका सत्यानाश कर सकता हूं बस यही ठीक है, लड़नाही अच्छा है ! फिर सोचता यह भी ठीक नही। धर्म्मकी शपथ कर चुका हूं कि महाराज या उनकी प्रजाका अनिष्ट नहीं करूंगा ! फिर धर्म्मके विरुद्ध काम कैसे करूं ! जान जाय तो जाय पर यह मुझसे न होगा। महाराजने मेरा बड़ा उपकार किया है—खिलाया है, पिलाया है और बनाया है 'नर्डक'। मुझसे क्रतघ्नता न होगी।

अन्तमें एक बात सूझी। बस इसीको मैंने सर्वश्रेष्ठ माना। इसके लिये लोग मुझे दूस सकते हैं। उनका दूसना शायद वाजिब भी हो परन्तु मैं अपनी आखें तथा स्वाधीनता बचानेके लिये जो झोंकमें आया सो कर बैठा। अगर मैं महाराजों तथा उनके मन्त्रियोंका स्वभाव जानता होता (जैसा अब जानने लगा हूं) तो जरूर मैं अपनी आखें निकलवालेता और इसीको गनीमत समझता। पर करूं क्या ? जवानी दिवानीके जोशमें मुझे कुछ और ही सूझ गई। मैंने सोचा ब्लेफस्कू जानेकी आज्ञा महाराज देही चुके हैं बस वहीं भाग चलूं सब बखेड़ा निबटा। ईमान और जान दोनोंही बचीं। सांप मरा न लाठी टूटी। मैंने सिकत्तर साहबको लिख भेजा कि महाराजकी आज्ञानुसार कल मैं ब्लेफस्कू जाऊंगा। उत्तरका भी आसरा न देख मैं उसी दम उस ओर चल पड़ा जिधर बन्दरगाहमें जङ्गी जहाज खड़े थे। वहां पहुंच कर मैंने एक जहाजका लङ्गर काट डाला और उसके आगेकी तरफ

एक रस्सी बांध दी। मैंने कपड़े सपड़े सब खोल खाल कर उस पर रख दिये। फिर जहाजको खेंचता हुआ कहीं तैरते और कहीं चलते—ब्लेफस्कूके बन्दरमें जा पहुंचा। वहां बहुत दिनों से लोग मेरी बाट देख रहे थे। उन लोगोंने दो आदमी दिये जो राजधानीकी तरफ लेचले। यहांकी राजधानीका भी नाम ब्लेफस्कूही है। मैंने उन दोनों आदमियोंको हाथमें उठा लिया था। जब राजधानी दो सौ गज दूर रही मैंने उन दोनोंको जमीन पर रखदिया और कहा जाओ मेरे आनेकी खबर महाराजके सिकत्तर को दो। एक घण्टेहीमें मुझे समाचार मिला कि महाराज सपरिवार दल बल समेत आगमनीके लिये आते हैं। मैं सौ गज और बढ़ गया। मुझे देखतेही वह लोग सब अपनी अपनी सवारियों परसे उतर पड़े। वह सब मुझे देख जरा भी अचम्भेमें न आये। मैं महाराज और महारानीके हाथोंको चूमनेके लिये धरतीमें लेट गया। फिर मैंने महाराजसे निवेदन किया "मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार श्रीमान्के दर्शनार्थ आया हूं। अब जो कुछ मेरे योग्य सेवा हो सो आज्ञा कीजिये।" मैंने अपने अपमानकी कुछ बातें नहीं कहीं क्योंकि खुल्लमखुल्ला खबर इउकी मुझे न थी। अब मैं उनके राज्यसे निकल आया हूं अब चाहे वह इसकी चर्चा न करें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

मेरी खातिर कैसी हुई या रहनेके लिये घर कैसा मिला आदि का पूरा वर्णन कर पाठकोंको दिक करना नहीं चाहता। मतलब यह कि जैसी चाहिये वैसी सब बातें हुईं। बिछौना लिलीपट से अपने साथ लाया था उसको बिछा कर सो रहता था।

द्वादश परिच्छेद।

तीन दिनके बाद मैं योंहीं टहलता हुआ सागरके पूर्वोत्तर तट की ओर जा निकला तो देखा कि समुद्रमें कुछ दूर पर नावकी तरह एक चीज औंधी पड़ी है। मैं जूते और मोजे उतार कर

जलमें धंस गया। कोई तीनसौ गज दूर जानेके बाद मालूम हुआ कि हकीकतमें वह एक नौका है जो तूफानकी मारी किसी जहाज से छूट कर यहां आपड़ी है। मैंने वापस आकर महाराजसे बीस बड़े बड़े जहाजों तथा हजार जहाजियोंकी मदद मांगी। महाराजने आज्ञा देदी। मैं सबको लेकर वहां जहां नावको देखा था जा पहुंचा। ज्वारका जोर बढ़ा आता था इससे वह नाव भी कुछ और पास आगई थी। जहाजियोंके पास मजबूत रस्से थे। मैं कपड़े उतार कर फिर समुद्रमें कूद पड़ा। जब नाव सौगजके फासले पर रही तब मैं तैरने लगा पानी ज्यादेथा। आखिर मैं उसके पास पहुंचा। जहाज भी पीछे आतेथे। जहाजियोंने रस्से का एक छोर फेंक दिया जिसे मैंने नावके एक छेदसे जो आगेकी तरफ था बांध दिया और दूसरा एक जहाजसे। पानी बहुत था इसलिये काम सिद्ध नहीं हुआ। लाचार हो मैं तैरने लगा और नावको एक हाथसे आगेकी ओर ठेलता भी जाता था। लहर भी मेरी मदद करती थी। निदान उसको ठेलते ठालते ऐसी ठौर लेआया जहां जल मेरी टुड्डी तक था। दो तीन मिनट सुस्ता कर मैंने फिर नावको ढकेलना शुरू किया। आखिर घुटने भर जलमें पहुंचा। मिहनतका काम अब पूरा होगया। मैंने उन रस्सोंको जो जहाज पर थे लिया उनका एक सिरा तो नावसे और दूसरा नौ जहाजोंसे बांध दिया। हवा अनुकूल थी। जहाजोंने खेंचना और मैंने धक्का देना शुरू किया। राम राम करते हम लोग किनारे के पास पहुंचे। ज्वारके जाने पर दो हजार आदमियोंकी मदद से नावको सीधा किया तो देखा वह बहुत टूटी नहीं है।

खैर किसी तरह उस नावको घसीट कर ब्लेफस्कूके बन्दरमें लेआया। इस विशाल वस्तुको देख कर ब्लेफस्कूवासी बहुत आश्चर्य्य करने लगे। मैंने महाराजसे कहा "ईश्वरने यह किश्ती मेरे लिये भेज दी है। अब इसी पर मैं यहांसे जाऊंगा और अपने देशको पहुंच जाऊंगा। श्रीमान् कृपा करके अपने कारीगरोंसे इसको

मरम्मत करवादें और मुझे स्वदेश जानेकी अनुमति दें।" महाराज ने सोच विचार कर मेरी प्रार्थना स्वीकार की।

कई दिन बीत गये लेकिन लिलीपटसे कुछ खबर नहीं आई। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पीछे गुप्त रीतिसे खबर मिली कि लिलीपटेश्वरको मुझ पर या मेरी कार्रवाई पर कुछ भी शक नहीं हुआ क्योंकि वह जानते थे कि उन्हींसे आज्ञा लेकर मैं यहां आया हूं और सभाकी बिलकुल बातें अभी प्रकाशित नहीं हुई हैं। उन्होंने समझा कि मैं केवल सैरके लिये ब्लेफस्कू आया हूं थोड़ेही दिनोंमें लौट जाऊंगा। लेकिन जब मेरे लौटनेमें देर हुई तो उन लोगोंका माथा ठनका। निदान खजानची और मन्त्रियोंकी रायसे एक होशियार आदमी मेरे अभियोगपत्रकी नकल तथा ब्लेफस्कू नरेशके नामसे चिट्ठी लेकर आया। चिट्ठीमें लिलीपटेश्वरकी दयालुताकी प्रशंसा करनेके बाद लिखा था "नरपर्व्वत नामका एक आदमी यहांसे भाग कर आपकी शरणमें गया है। इसके ऊपर बड़े बड़े दोष लगाये गये हैं। वह दण्ड पानेके डरसे भाग गया है। इसके अपराध तो भारी हैं तथापि दया करके केवल आखें निकलवा लेने की व्यवस्थाकी गई है। आप उसको मुश्कें बांध कर जल्द यहां भेज दीजिये। अगर दो घण्टेके अन्दर वह हाजिर नहीं होगा तो इसकी "नर्डक" की उपाधि छीन लीजायगी और वह राजविद्रोही समझा जायगा। अगर आप भी सन्धि और मित्रता रखना चाहते हैं तो जल्द उसे हाथ पैर बांध कर भेज दीजिये।"

ब्लेफस्कू नरेशने तीन दिनके बाद सोच विचार कर बहुतसे उजर दिखलाते हुए यों जवाब लिखा "यद्यपि नरपर्व्वत मेरे जहाजोंको लेगया है तथापि इसको हम भेज नहीं सकते हैं। सन्धि के समय उसने हमारा बहुत कुछ उपकार किया है। और अब भेजनेकी दरकार भी नहीं है क्योंकि अब वह यहांसे अपने देशको जानेवाला है। समुद्रमें एक बड़ीसी नाव मिल गई है। उसकी मरम्मत होरहीहै। मरम्मत होतेही वह यहांसे जल्द चला जायगा।

आशा है कि चन्द हफतेमें यह दोनो राज्य इस असह्य भारसे मुक्त होजायंगे।"

इस उत्तरको लेकर दूतराम लिलीपट गये। ब्लेफस्कू नरेशने यह सब बातें कहनेके बाद मुझसे कहा "अगर तुम यहां रहो तो तुम्हें मैं रख सकता हूं।" लेकिन मैं अब राजा महाराजोंका विश्वास क्यों करने लगा? मैंने महाराजको कृपाका धन्यवाद करके कहा "जब परमात्माने मेरे लिये एक नौका भेज ही दी है तो अब यहां रहके क्या करना है? भाग्यके भरोसे नौका समुद्रमें छोड़ दूंगा परमात्मा बेड़ा पार लगा देगा। यहां रहके आप दो बड़े बड़े महाराजोंमें वैर कराटेना मुझे पसन्द नहीं है। अब कृपा करके मुझे जानेकी आज्ञा होजाय।" महाराजने भी प्रसन्न होकर आज्ञा देदी।

बहुतसी बातोंको सोच विचार कर मैंने भी जल्द प्रस्थान करना विचारा। पांचसौ कारीगर पाल बनानेमें लगे। सबसे मोटे कपड़ेको तेरह तह करके दो पाल बने। मैंने अपने हाथोंसे रस्से तय्यार किये। एक भारी पत्थर ढूंढ़ कर लङ्गर बनाया। कई बड़े बड़े पेड़ काट कर डांड़ और पतवार बनाये। महाराजके बढ़इयोंसे इन कामोंमें बहुत कुछ मदद मिली।

एक महीनेके अन्दरही सब ठीक ठाक होगया तब मैंने महाराजसे बिदा मांगी। महाराज सपरिवार महलसे बाहर आये। मैंने जमीनमें लेट कर उनके हाथ तथा महारानीके हाथ चूमे। फिर एक एक करके सब लोगोंके हाथोंको चूम डाला। महाराजने दो हजार अशर्फियां और अपनी एक बड़ी तसवीर दी। तसवीरको फूटनेके डरसे मैंने पट पट अपनी जेबमें दाखिल किया।

मैंने किश्तीमें एकसौ मरे बैल, तीनसौ मरी भेड़ें और खाने पीनेके लिये रोटियां और शराब भरपूर रखली थी। इनके अलावे छ जीती गायें, दो जीते सांड़ और उतनेही भेड़े भेड़ रख लिये थे। इन सबके खिलाने पिलानेके लिये घास फूस भी लिया था।

मैं तो साथमें एक दर्जन वहांके निवासियोंको भी धर लेता पर करूं क्या? महाराजने कह दिया था कि अगर कोई जाना चाहे तोभी किसीको सङ्ग मत लेजाना। इसी लिये चलनेके समय मेरी जेबोंकी तलाशी भी हुई थी।

इसी तरह सब सामान लेस होकर १७०१ ईस्वीकी २४ वीं सितम्बरकी छः बजे सवेरे मैंने ब्लूफस्कू बन्दरसे कूच किया। हवा दक्खिन पूरब कोनसे बहती थी। मैं सीधा उत्तर मुँह चला। करीब बारह मील जानेके बाद शामके छः बज गये। पश्चिमोत्तर कोनकी तरफ डेढ़ मीलके फासले पर एक टापू नजर आया। मैंने किश्तीको उधरही घुमाया। वहां पहुंच कर मैंने टापूके उस हिस्से में जिधर हवाका जोर कम था अपनी किश्तीका लङ्गर गिराया। टापू आबाद नहीं था। कुछ खा पीकर आराम किया। खूब सोया। उठनेके दो घण्टे बाद सवेरा हुआ। रात साफ और स्वच्छ थी। उठ कर कलेवा किया हवा अच्छी थी। फिर लङ्गर उठाया। कलकी तरह फिर उत्तर मुंह जाने लगा। दिग्दर्शन यन्त्रसे दिशाका निर्णय कर लेता था। उस दिन कोई बात लिखने लायक हुई नहीं। तीसरे दिन तीसरे पहरको एक जहाज दिखाई पड़ा दक्षिण पूर्व्वकी ओर जारहा था। मैंने भी किश्ती उसी तरफ घुमाई। पुकारा पर कोई जवाब नहीं मिला। हवाका जोर घट चला था। मैंने सब पाल तान दिये। आध घण्टेके बाद जहाजवालोंने मुझे देखा। उन्होंने अपना फरहरा उड़ाया और बन्दूक छोड़ी। उस समय मेरे आनन्दका क्या ठिकाना था। फिर देश पहुंच कर अपने बाल बच्चोंके मुँह देखने की उम्मीदसे तबीयत हरीभरी होगई। जहाजके पाल उतारे गये। २६ वीं सेप्टेम्बरकी शामको मैं जहाजके पास जा पहुंचा। अङ्गरेजी फरहरा देखनेके लिये मेरा दिल उछल रहा था। गायों और भेड़ोंको जेबमें धर लिया। बाकी चीजोंको ले जहाज पर चढ़ गया। जहाज अङ्गरेजी सौदागरका था। यह जापानसे

वापिस आरहा था। इसका कप्तान था जौन बिड़। यह बड़ा नेक तथा अपने काममें पक्का था। कोई पचास आदमी जहाज पर थे। उनमें मेरा एक पुराना दोस्त भी था। उसीने कप्तानसे मेरी जान पहचान कराई। कप्तानने मेरी बहुत खातिर की। उसके पूछने पर मैंने अपनी रामकहानी सुनाई तो वह मुझे पागल समझने लगा। जब मैंने पाकेटसे अपने पशुओंको निकाल कर सामने रख दिया तब मेरी बातोंको सत्य माना। फिर मैंने ब्लेफस्कू नरेशकी तसवीर तथा अशर्फियां दिखलाईं। मैंने कप्तानको दोसौ अशर्फियां दीं और कहा कि इङ्गलैण्ड पहुंच कर एक गाय और गाभिन भेड़ दूंगा।

आखिर १७०२ ईस्वीकी १३ वीं अप्रैलको डाउन्सके बन्दरमें पहुंचे। एक बड़ी मुशकिल यह हुई कि एक भेड़को एक चूहा पकड़ कर लेगया। बाकी ढोर कुशलसे पहुंचे। ग्रिनविच पहुंच कर उन्हें चरनेके लिये मैदानमें छोड़ दिया। वह सब चर कर मस्त होगये। अगर कप्तान कृपा कर थोड़ीसी बढ़िया जगह जहाज पर न देता तो यह सब जानवर जीते जागते न पहुंचते। जब चारा घट गया तो बिसकुट तोड़ कर पानीके साथ खिलाता था। इङ्गलैण्ड पहुंच कर मैंने बड़े बड़े आदमियोंसे इन जानवरों को दिखला कर बहुत कुछ फायदा उठाया। दूसरा सफर करनेसे पहलेही इन्हें मैंने ६००० रुपयेमें बेच डाला। भेड़ोंने बच्चे जनके अपना खान दान बढ़ाया। मैं आशा करता हूं ऊनवाले इनसे बड़ा फायदा उठावेंगे क्योंकि इनका ऊन बहुत बारीक और बढ़िया होता है।

आखिर मैं घर पहुंचा। बाल बच्चोंसे मिलकर अपार आनन्द प्राप्त हुआ—छाती ठण्ढी हुई। पर अफसोस! घरमें दोही महीने रहा। देश विदेश देखनेकी कुछ ऐसी चाट मुझे पड़ गई थी कि ज्यादे दिन घरमें ठहर न सका। रिडरिफ मुहल्लेमें एक अच्छा घर देखकर गृहस्थी उठा लाया। खर्च बर्चके लिये स्त्रीको पन्द्रह हजार

रुपये दिये बाकी पूंजी अपने पास रक्खी। काकाजीन मरनेके समय तीनसौ चालीस सालाना आमदनीकी सम्पत्ति मेरे नाम लिख गये थे। इतनीही आयकी एक जगह और थी। इसवास्ते अन्न वस्त्रका अब टोटा नहीं रहा। मेरा लड़का जौनी पाठशालामें पढ़ता है। मेरी बेटी जिसका नाम बेटी है अब बेटे बेटीवाली हुई। यह सूईका काम करती है। बालबच्चोंसे बिदा होकर मैं फिर सफरमें चला। बिदाके समय सबकी आंखें डबडबा आई थीं। खैर किसी तरह बाहर हुआ। कप्तान जोन निकोलसका जहाज सूरतको जाता था। अबके मैं इसी जहाज पर मुकर्रर हुआ। इस यात्राका वृत्तान्त दूसरे खण्डमें लिखूँगा। यह यात्रा बड़ी मजेदार हुई। इसका वृत्तान्त आश्चर्य्य घटनाओंसे परिपूर्ण है।

इति प्रथम खण्ड समाप्त।

विचित्र-विचरण।

द्वितीय भाग।

ब्रौवडिगनैगकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

सुखसे घरमें रहना मेरे भाग्यमें लिखाही न था। दो महीने बाद फिर स्वदेश त्यागना पड़ा। ता० २० वीं जून १७०२ ई०को सूरतके लिये जहाज खुला। जहाजमें सौदागरीकी चीजें भरी थीं। यह कह चुका हूं कि इस जहाजके कप्तानका नाम जौननिकोलस था। उत्तमाशा अन्तरीप तक वायु बहुत अनुकूल रही। यहां ताजा पानीके लिये हम लोग ठहर गये। पीछे जहाजकी पेंदीमें एक छेद दिखाई पड़ा। लाचार जहाज खाली किया गया। इधर कप्तानको शीत ज्वरने आघेरा। इसलिये मार्च तक हम लोग यहीं डेरा जमाए रहे। सब ठीक ठाक होजाने पर हम लोगोंने फिर लङ्गर उठाया। मेडेगास्करके मुहाने तक हम लोग निर्विघ्न चले गये। लेकिन इस द्वीपसे उत्तर मुंह होतेही वायुने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। इस प्रान्तमें दिसम्बरके प्रारम्भसे मईके आरम्भ तक सदैव समान गतिसे वायु सञ्चालित होती है। किन्तु १९ वीं अप्रैलको इसका वेग बहुतही बढ़ गया। लगातार बीस दिन तक यही दशा रही। इतनेमें हम लोग मुलक्काद्वीपसे कुछ पूरब जा पहुंचे। २ मईको हवाका जोर कुछ घट गया। मैं हर्षित हुआ परन्तु बहुदर्शी कप्तानने कहा "होशियार रहो—बड़ा भारी तूफान आनेवाला है।" आखिर वही हुआ। दूसरेही दिन भीषण तूफान

आपहुंचा। परमात्माकी दयासे जहाज डूबा तो नहीं पर राहसे भटक गया। हम लोग कहां जा पहुंचे कह नहीं सकते। बड़े बड़े पुराने जहाजी भी कुछ निर्णय न कर सके। हम सब हट्टे कट्टे थे, जहाज भी दुरुस्त था, खानेकी सब सामग्री थी लेकिन पीनेके लिये जल न था। बहुत कष्ट हुआ। जहाज जिधर जाता था उधरही जाने दिया। दिगदर्शन यन्त्रसे मालूम हुआ कि हम लोग ठीक पूरब जारहे हैं।

१६ वीं जून १७०३ ईस्वीको दूरसे कुछ भूमि दिखलाई पड़ी। जहाज उधरही घुमाया गया। १७ वीं को उस भूमिके पास जा पहुंचे। तो देखा एक टापू है। लङ्गर गिराया गया! कप्तानने कई हथियारबन्द आदमियोंको पानी ढूँढ़नेके लिये कहा। वह लोग किश्ती पर सवार हो किनारेकी ओर गये। कप्तानकी आज्ञा से मैं भी उनके साथ चला गया था। किनारे पर आए लेकिन कोई जलाशय नहीं मिला और न आबादी वगैरा के कुछ चिन्ह दिखाई पड़े। और लोग तो जलकी टोहमें इधर उधर घूमने लगे पर मैं एक ओर सीधा एक मील तक योंही चला गया। जमीन बिलकुल पहाड़ी तथा ऊसर थी। थकावट मालूम हुई और दूसरे कोई मनोहर दृश्य दिखाई न दिया इससे मैं किनारेकी ओर धीरे धीरे लौटने लगा। दूरसे मैंने देखा कि मेरे साथी सब किश्ती पर चढ़े जहाजकी तरफ जारहे हैं। मैंने बहुतेरा पुकारा पर कुछ लाभ नहीं हुआ। इतनेमें मेरी दृष्टि एक विशाल जन्तु पर जा पड़ी जो किश्तीके पीछे पीछे बड़ी तेजीके साथ जारहा था। उसके डग भी बड़े बड़े पड़ते तथा जल घुटनोंही तक था। डोंगी बहुत आगे निकल गई थी और जलमें जरा पत्थर भी बहुत थे इससे वह जीव उन लोगोंको दौड़ कर पकड़ न सका। उस भयानक जन्तुको देखतेही मेरे तो देवता कूच कर गये। डरके मारे फिर पीछे भाग चला। कुछ दूर जाकर एक पहाड़ी पर चढ़ गया। वहांसे आस पासकी छटा दिखाई पड़ी। जमीन आबाद थी। पर घासकी

लम्बाई देख कर पहले मुझे बहुतही अचरज हुआ। बीस फुट लम्बी घास अब तक मैंने कभी नहीं देखी थी।

आगे बढ़ा तो एक बड़ी चौड़ी सड़क मिली जो जौके खेतमें हो कर निकली थी। पीछे मालूम हुआ कि वह सड़क नहीं मामूली पगडण्डी थी। उसकी चौड़ाई देख करही मुझे यह धोखा हुआ था। कुछ देर तक मैं योंही चला किया। समय फसलका था। नाजके पेधे ४०।४० फुट ऊंचे देखनेमें आये। इन सब चीजोंको देख कर मेरी अक्ल गुम थी। लगातार एक घण्टा चलनेके बाद मैं खेतके दूसरे छोर पर जा पहुंचा। यह १२० फुट ऊंची टट्टी से घिरा हुआ था। और पेड़ सब तो इतने ऊंचे थे कि देखनेसे टोपी गिर पड़ती थी। एक खेतसे दूसरे खेतमें जानेके लिये चार सीढ़ियां बनी थीं। ऊपर एक पत्थर रक्खा था उसी परसे नीचे उतरना पड़ता था। इन सीढ़ियोंसे उस पार जाना मेरे लिये असम्भव था। क्योंकि एक एक सीढ़ी छः छः फुटके फासले पर और ऊपरवाला पत्थर २० फुटसे भी अधिक ऊंचे परथा। मैं इस विचार में था कि टट्टीमें कोई छेदवेद मिल जाय तो उस पार चला जाऊं इतनेमें बाड़के उस पारसे एक राक्षस सीढ़ीकी तरफ आता हुआ दिखलाई पड़ा। इसका भी डील डौल उसी जन्तुके जैसा था जो मेरे साथियोंके पीछे समुद्रमें दौड़ा जाताथा। यह साधारण गिरजाके समान ऊंचा था और एक एक डग दस दस गजका करता था। आश्चर्य और भयसे मेरी अजब दशा होगई। मैं एक झुरमटमें छिप गया। वहांसे देखा वह राक्षस बाड़के ऊपर चढ़ गया और दाहिनी ओर गर्दन फेर कर जोरसे चिल्ला उठा। चिल्लाना क्या था बादल की गरज थी—उसकी आवाजसे मेरे कान बहरे होगये। इतनेमें उसी परिमाणके और सात राक्षस हाथोंमें हंसवे लिये आपहुंचे। यह हंसवे हम लोगोंके हंसवोंसे छः गुने बड़े थे। यह सातों अपने पहनावेसे मजदूर मालूम पड़ते थे। पहलेके अर्थात् सरदारके कुछ कहने पर वह सब मजदूर उसी खेतको जिसमें मैं छिपा

था काटने लगी। मुझसे जहां तक बना दूर भाग चला। कहीं कहीं पौधे इतने घने थे कि चलनेमें बड़ी तकलीफ हुई। जौके नुकीले कांटे बदनमें चुभते थे पर क्या करता—प्राण लेकर भागा जाता था। पीछेसे जौ काटनेवालोंकी आहट सुनाई पड़ी। थकावट, भय और निराशासे मेरी घबड़ाहटका ठिकाना न रहा। लाचार हो वहीं लेट गया। सोचा अब प्राण देनेहीमें सुख है! स्त्री और पुत्रका स्मरण कर गला भर आया। अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया। हाय! क्यों घर बार छोड़ा? न घरसे निकलता न जान जाती। हाय मैं बेमौत मरा! इस दुःखमें भी लिलीपटकी याद आगई! वहां मैंही एक राक्षस समझा गया था। वहां मैं जङ्गी जहाजोंको खेंच लाया था और वहां न जाने मैंने कितने और अद्भुत कर्म्म किये थे! हाय! जैसा मैं लिलीपटी लोगोंको समझता था वैसेही यह राक्षस मुझे समझेंगे! सबसे दुःखकी बात तो यह है यह जङ्गली असभ्य जीव देखतेही मुझे खा जायंगे क्योंकि आकार के सदृशही मनुष्यमें जङ्गलीपन और असभ्यता होती है। विद्वानों ने बहुत ठीक कहा है कि मुकाबला किये बिना किसी वस्तुको छोटी बड़ी नहीं कहना चाहिये। लिलीपटी लोगोंसे भी छोटे और इन राक्षसोंसे भी बड़े जीव संसारमें हो सकते हैं!

इस बीचमें एक मजदूर मेरे बहुत निकट आगयाथा। मैंने सोचा अगर कहीं धोखेसे इसके पांव मुझ पर पड़ गये तो यहीं ढेर हो जाऊंगा या एक हाथ हंसवेहीका चल गया तो मेरा काम तमाम है! डरके मारे प्राण सूख गये। जब वह मजदूर फिर आगे पैर बढ़ाने लगा मैं खूब जोरसे चिल्ला उठा। मेरी आवाज सुनकर वह चौकन्ना हुआ और इधर उधर देखने लगा। आखिर उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। जैसे कोई किसी विषैले छोटे जीव जन्तुको देख कर होशियारीसे उसे उठानेकी तरकीब सोचता है वैसेही वह भी खड़ा खड़ा सोचने लगा। निदान साहस करके उसने अंगूठे और तर्जनीसे मेरी कमर पकड़ कर उठा लिया और आखोंसेतीन



नं० ७
निदान साहस करके उसने अंगूठे और तर्जनीसे मेरी कमर
पकड़ कर उठालिया और आंखोंसे तीन गज
दूर रखकर गौरसे देखना शुरुकिया।
पृष्ठ ७०

गज दूर रख कर गौरसे देखना शुरू किया। जब उसने मुझे जमीन से साठ फुट ऊपर उठाया तो मैं कुछ न बोला। जिसमें मैं गिर न पडूं इस ख्यालसे उसने खूब जोरसे मुझे दबाया था। उसके दबानेसे बहुतही कष्ट हुआ। मैं सूर्य्यकी ओर निहार कर अति दीनतासे बिनती करने लगा। मुझे यही मालूम होता था कि अब इसने मुझे जमीन पर पटका क्योंकि हम लोग भी छोटे मोटे कीड़े मकोड़ेको योंही फेंक देते हैं। लेकिन परमात्माकी दयासे मेरे ग्रह अच्छे थे। वह मेरी बोली और हाव भावसे बहुतही प्रसन्न हुआ। आदमियोंकी भांति बोलते देख कर उसे और भी अचम्भा हुआ। परन्तु मेरी बातें उसकी समझमें नहीं आईं। आखिर आखें डबडबा कर मैं रोने लगा और कमरकी ओर देखने लगा। वह मेरा भाव समझ गया। चटपट कोटके दामनमें मुझे लपेट कर अपने मालिकके पास ले आया। यह मालिकराम वही थे जिनको खेत में पहले मैंने देखा था।

द्वितीय परिच्छेद।

किसानने अपने मजदूरसे सब बातें सुन कर एक तिनका जो छड़ीके समान लम्बाथा उठा लिया और मेरे कोटके दामनको उलट पलट कर देखा। उसने शायद समझा कि यह खाल है। फिर बाल हटा कर मेरे मुंहको भली भांत देखा। सब मजदूरोंको बुला कर उसने पूछा कि ऐसा जानवर तुम लोगोंने और कभी यहां देखा है। लेकिन वह लोग कुछ जवाब न देसके। यह सब बातें मुझे पीछे मालूम हुई। उसने मुझे तब जमीन पर सुला दिया। मैं चटपट उठ कर धीरे धीरे इधर उधर घूमने लगा जिसमें वह जानलें कि मैं भागना नहीं चाहता हूं। वह सब भी तमाशा देखने के लिये मुझे घेर कर बैठ गये। मैंने टोपी उतार कर किसानको झुक कर सलाम किया फिर घुटना टेक, हाथ उठा और ऊपर देख कर जहां तक बना गला फाड़ कर प्रार्थना की। जेबसे अश-

फिर्योंका बटुआ निकाल कर उसके आगे रक्खा। उसने ले तो लिया पर खोल न सका। तब मैंने इशारेसे कहा कि अपनी हथेली भूमि पर रख दो। उसने वही किया। मैंने बटुआ खोल कर सब सिक्के उसके हाथ पर उलट दिये। उसने थूकसे उंगली गीली कर के उन सिक्कोंको उठा उठा कर देखा लेकिन कुछ समझ न सका। फिर उसने उन्हें बटुएमें और बटुएको जेबमें रखनेका इशारा किया। मैंने तुरत उसकी आज्ञा माथे चढ़ाई।

अब किसानको पूरा विश्वास होगया कि मैं कोई सज्ञान जीव हूं। वह मुझसे बारम्बर बोलता था। यद्यपि उच्चारण स्पष्ट था तथापि उसको बोलीसे मेरे कानके परदे फटते थे। मैं भी गरज गरज कर कई बोलियोंमें उत्तर देता पर कोई भी किसीकी बात नहीं समझता था। उसने मजदूरोंको काम पर जानेके लिये कह कर पाकटसे अपना रुमाल निकाला। यह एक फुटसे ज्यादे मोटा नहीं था। उसी रुमालमें बांध कर वह मुझे अपने घर ले गया। विलायतमें बीबियां जिस प्रकार मकड़े और मेडक देखकर डर जाती हैं उसी प्रकार उसकी स्त्री भी मुझे देखतेही चौंक उठी और चिल्ला कर भाग गई। निदान वह मेरी चेष्टाओंको देख ढीठ हुई और फिर तो मुझे बहुत प्यार करने लगी।

बारह बजे दिनको खानसामा खाना लेकर हाजिर हुआ। जिस रकाबीमें खाना आया था उसका व्यास २४ फुटथा। किसान के परिवारमें केवल उसकी स्त्री तीन लड़के और उसकी बुढ़िया दादी थी। जब सब भोजन करनेके लिये बैठे तब किसानने कुछ दूर अलग मेज पर मुझे बिठाया। मेज तीस फुट ऊंची थी। मैं गिरने के डरसे किनारा छोड़ बीचमें जा बैठा। किसानकी स्त्रीने मांस के तथा रोटीके कुछ टुकड़े थालमें रख कर मेरी ओर सरका दिये। मैं सलाम करके चबाने लगा। मेरा खाना देख कर वह सब बहुत ही प्रसन्न हुए। फिर एक छोटासा प्याला मंगवा कर मुझे शराब पीनेके लिये दी। यहाशय! इस छोटेसे प्यालेमें छः बोतल शराब

बंटती थी। मैंने बड़ी कठिनतासे दोनों हाथोंसे प्यालेको उठाया और झटकेके साथ गृहिणीका स्वास्थ्य पान किया। फिर अङ्गरेजी में कृतज्ञता प्रकाशकी। इस पर वह सब खिलखिला उठे। उनके विकट हास्यसे मैं तो वधिर होगया। मदिराका स्वाद कुछ बुरा नहीं था। किसानने सङ्केतसे मुझे अपनी तरफ बुलाया। मैं चला लेकिन रोटीके टुकड़ेकी ठोकर खाकर मेज पर पट गिर पड़ा। ईश्वरकी दयासे चोट नहीं लगी। खैर, उठा और फिर चलने लगा। इतनेमें किसानके बेटेने जिसकी उमर दस वर्षसे अधिक न थी टांग पकड़ कर मुझे उठा लिया और फिर इतना ऊंचा उठाया कि मेरा कलेजा कांप गया। किसानने लड़केके हाथसे मुझे छीन लिया और एक तमाचा उसके बायें गाल पर जमा कर वहांसे चले जानेके लिये कहा। मैंने हाथ जोड़ कर कसूर माफ करनेके लिये इशारा किया। उसने भी मेरी बात मानली। बालक फिर बैठ गया। मैंने पास जाकर उसके हाथको चूमा और किसान ने मेरी देह पर बालकका हाथ फिरवा दिया।

जब सब भोजन कर रहे थे गृहिणीकी पाली हुई बिल्ली उसकी गोदमें आकूदी। गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी मुंह फेर कर देखा तो बिल्लीजी बैठी हैं और गृहिणी प्यारसे उस पर हाथ फेर रही हैं। यह बिल्ली भी तीन बैलोंके बराबर थी। सभी चीज आश्चर्यकी बढ़ानेवाली थीं। गृहिणीने मांसका टुकड़ा उसको खानेके लिये दिया। यद्यपि मैं बिल्लीसे पचास फुट दूर था तथापि उसकी भयानक सूरत देख कर मैं डर गया था। कहीं मुझ पर चोट न कर बैठे इस ख्यालसे गृहिणी भी उसे जोरसे पकड़े हुए थी। लेकिन उसने मेरी ओर नजर उठा कर देखा भी नहीं। किसानने एक तमाशेके लिये तीन गजके फासले पर उसे खड़ा किया पर वह निगोड़ी बिल्ली मटकी भी नहीं। लोगोंसे सुना है और देखा भी है कि किसी भयानक जीवको देख कर डरने या भागनेसे पीछा करता है पर निडर होकर डटे रहनेसे कुछ नहीं कहता। मैं भी

बिल्लीके सामने बराबर डटा रहा। दो चार बार साहस करके उसकी बगलसे निकल भी गया। आखिर वही बिचारी डर कर चम्पत होगई। इतनेमें तीन चार कुत्ते आपहुंचे। यह सब बहुत बड़े थे—इनमेंसे एक तो हाथीके समान था। मैं इन सबको देख कर तनक भी न डरा।

जब भोजन समाप्त होने पर धा दाई एक वर्षका बालक गोदमें लिये आ उपस्थित हुई। वह बालक खिलौना समझ कर मुझसे लेनेके लिये रोने लगा। उसकी माता उसका मचलना देख कर मुझे उसके पास लेगई। उस लड़के नादानने मेरी कमर पकड़ली और मेरा सिर अपने मुंहमें डाल लिया। मैं इतने जोरसे चिल्ला उठा कि उसने डर कर मुझे फेंक दिया। अगर गृहिणी अपने अंचलमें मुझे न लेलेती तो मैं अवश्य चकनाचूर हो जाता। बालक फिर रोने और मचलने लगा। दाईने चुप करानेके वास्ते झुनझुना जो बालककी कमरसे बंधा था बजाया पर वह क्यों चुप होने लगा था? इस झुनझुनेका शब्द बहुत कर्कश था। जब किसी तरहसे भी वह शान्त न हुआ तब उसने अन्तिम उपाय किया अर्थात् उसे दूध पिलाने लगी। उस दाईके स्तनद्वयको देख कर मुझे जितनी घृणा हुई उतनी आज तक कभी नहीं हुई। उन स्तनोंके रूप रङ्ग और आकारकी तुलना किससे करूं सो समझमें नहीं आता है। यह कुच छः फुट ऊंचे तथा इनका घेरा १६ फुट से कदापि कम न था। स्तनका मुँह मेरे सिरसे आधा था। इनके रङ्ग विचित्र थे। इन पर नाना प्रकारके दाग थे। इन कुचों को देख कर मेरा तो जी घबड़ा उठा। उस समय मुझे विलायती बीबियोंकी याद आगई। यह बीबियां हमारे समान होनेहीके कारण इतनी सुन्दर मालूम होती हैं। इनके दोष हम लोग इन आखोंसे नहीं देख सकते हैं। यदि सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से इनके शरीर देखे जायं तो इनका यह गोरा चमड़ा भी रूखा मोटा और बदरङ्ग मालूम पड़ेगा।

जब मैं लिलीपटमें था तो वहांके लोग मुझे संसार भरसे अधिक गोरे मालूम होते थे। मुझे स्मरण है एक दिन जब इसी बातकी चर्चा चली तो वहांके एक पण्डितने कहा था "हां जब तुम्हें मैं नीचेसे देखता हूँ तो तुम्हारा चेहरा साफ सुथरा चिकना और गोरा मालूम पड़ता है लेकिन जब तुम अपने हाथमें मुझे उठा लेते हो तब तुम्हारा चेहरा भयङ्कर मालूम देता है—बदनमें बड़े बड़े छेद दिखाई पड़ते हैं। दाढ़ीकी खूटियां सूअरके बालसे दस गुना बड़ी दिखाई देती हैं और रङ्ग बिलकुल फीका जचने लगता है।" जब वह लिलीपटकी स्त्रियोंकी बाबत कहता कि फलानीके मुंह पर दाग है—फलानीका मुंह चपटा है और फलानीकी नाक बड़ी है तो मुझे कुछ भी नहीं मालूम होता था। यह बात बहुत ठीक है कि छोटी छोटी वस्तुओंका गुण दोष इन नेत्रोंसे प्रगट नहीं होताहै परन्तु बड़े बड़े पदार्थोंका होजाताहै। पाठकगण! कहीं आप यह न समझ बैठे हों कि यह विराट जीव कुरूप होते हैं। नहीं ऐसा मत समझिये—यह बड़े सुन्दर और रुपवान होतेहैं। विशेष कर मेरे किसानकी आकृति पृथ्वी परसे अति कमनीय मालूम होती थी।

खैर भोजन समाप्त हुआ। किसान फिर अपने खेत पर गया किन्तु उसके भावसे प्रगट हुआ कि वह जानेके समय अपनी स्त्रीसे मेरी हिफाजत करनेके वास्ते कह गया था। मैं थकावटके मारे ऊंघता था। गृहिणीने मेरी दशा समझ अपने बिस्तरे पर मुझे सुलाकर एक साफ रूमाल उढ़ा दिया। यह रूमाल काहेको जङ्गी जहाज का पाल नहीं नहीं उसका भी लकड़दादा था।

मैं दो घण्टे तक सोया। सपनेमें बाल बच्चोंको देखा। आंखें खुली तो अपनेको बीस गज लम्बे पलङ्ग पर एक बड़े कमरेमें पाया। यह कमरा दो तीन सौ फुट चौड़ा और सौ फुटसे अधिक ऊंचा था। नींद खुलने पर लड़केवालोंकी यादसे बहुत दुःख हुआ। घरकी मालकिनी मुझे तालेमें बन्द करके अपने गृह कार्य्यमें लगी थी। पलङ्ग भूमिसे आठ गज ऊंचा था। मुझे जङ्गलकी हाजत

थी इसलिये नीचे उतरना चाहता था। पुकारनेकी हिम्मत न पड़ी और पुकारही कर क्या होता—मेरी आवाज तो वहीं गूंजकर रह जाती। जब मैं पड़ा पड़ा सोच रहा था दो चूहे पलङ्ग पर आधमके और लगे इधर उधर सूंघा सांघी करने। एक सूंघते सूंघते मेरे मुँहके पास आपहुंचा। मैं डरके मारे उठ बैठा और अपना खञ्जर निकाल लिया। यह लगे दोनो तरफसे मुझ पर आक्रमण करने। एकने तो झपट कर मेरा गलाही पकड़ लिया। ईश्वर की दयासे मैंने भी तुरत खञ्जरका एक हाथ ऐसा मारा कि वह वहीं एकसे दो होगया। अपने साथीकी यह दशा देखकर दूसरा चलता बना लेकिन मैंने बड़ी फुरतीके साथ उस पर भी एक हाथ चलाही दिया था। इसके बाद दम लेनेके लिये मैं चारपाई पर पर टहलने लगा। यह चूहे पहाड़ी कुत्तेके समान बड़े तथा अति भयङ्कर थे। यदि मेरे पास खञ्जर न होता तो यह जरूर मुझे खा जाते। इसकी दुम मैंने नापी तो एक इञ्च कम दो गज हुई। लोहूसे बिछौना तर बतर होगया। मैंने बड़ी कठिनतासे मरे हुए चूहेको नीचे फेंक दिया।

इतनेमें गृहिणी आगई। मुझे लहूमें भरा देख कर चट गोद में उठा लिया। मैंने चूहेकी ओर संकेत किया और बता दिया कि मैं निरापद हूं। यह देख वह बहुत प्रसन्न हुई। फिर दाईको बुलाया दाईने आकर चिमटसे मरे चूहेको खिड़की की राहसे फेंक दिया। गृहिणीने मुझे मेज पर खड़ा किया। मैंने अपना खञ्जर दिखलाया और पोंछ पांछ कर रखलिया। अब मुझे उस कामकी हाजत थी जिसको दूसरा कोई मेरे बदले नहीं कर सकता था। मैंने संकेतमें कहा कि मुझे जमीन पर बिठला दो। बड़ी कठिनतासे उसने मेरा अभिप्राय समझा। मुझे गोदमें लिये बगीचे पहुंची। वहां जमीन पर बिठा दिया। मैं उसे वहीं रहनेके लिये कह कर दोसौ गज आगे निकल गया। एक झुरमटमें बैठ कर मैंने हाजत रफाकी।

ऐसी ऐसी बातें लिखनेसे बहुतेरे पाठक नाक भौंह चढ़ावेंगे परन्तु उन्हें जान लेना चाहिये कि तत्वज्ञानियोंकी कल्पनाशक्ति बढ़ानेमें यह बातें बहुत कुछ सहायता करेंगी। इन्हीं लोगोंके उपकारके लिये मैंने अपनी यात्राका रत्ती रत्ती वृत्तान्त लिख डाला है। नाजुक मिजाज पाठक क्षमा करें।

तृतीय परिच्छेद।

किसानकी नौ बरसकी एक कन्या थी। यह सूईके काममें तथा बच्चोंको कपड़े पहरानेमें बड़ी पक्की थी। इसकी मा और इसने मिल कर मेरे सोनेके लिये एक पालना तय्यार किया था। चूहोंके डरसे रातको यह पालना ऊंची जगह पर लटकाया जाता था। जब तक इन लोगोंके साथ रहा मैं इसी पर सोता था। ज्यों ज्यों इनकी भाषा मैं सीखने लगा त्यों त्यों मेरा सुख बढ़ चला—जब जिस वस्तुकी दरकार होती मांग लेता था। यह बालिका ऐसी बुद्धिमती थी कि दोही चार बार उसके सामने कपड़े उतारने से वह मुझको कपड़ा पहनाना सीख गई। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझको कपड़े पहरावे तथापि वह पहना देती थी। उसने मेरे वास्ते सात कमीजें तथा और कई कपड़े तैयार किये थे। यह कपड़े बहुत मोटे थे। यह मुझको अपनी भाषा भी सिखाती थी। जब मैं कोई चीज देखकर पूछता यह क्या है तो वह अपनी भाषामें उसका नाम बता देती थी। बस इसी ढङ्गसे उस देशकी भाषा मैं बहुत जल्द सीख गया। इस बालिकाका स्वभाव बहुत अच्छा था। यह नाटी थी तथापि चालीस फुटसे कहीं लम्बी थी। इसीने मेरा नाम ग्रोलड्रिग (बचूङ्गड़ा) रक्खा। फिर सब इसी नामसे मुझको पुकारने लगे। उसीकी कृपासे उस देशमें मेरी जान बची थी। जब तक वहां मैं रहा उससे कभी अलग नहीं हुआ। वह मुझको खिलाती पिलाती थी इससे मैं उसको "दाया" कहता। मैं उसका बहुत ऋणी हूं। वह मेरा बहुत लाड़ प्यार करती थी।

आस पासके गांवोंमें मेरी खबर बिजलीकी तरह फैल गई। जहां सुनो वहां मेरीही चर्चा होती थी। आपसमें लोग कहते थे "अमुक किसानके खेतमें एक विचित्र जीव मिला है। वह बहुत ही छोटा है लेकिन सूरत शकल आदमी कीसी है। सब कामभी आदमीकी तरह करताहै। उसकी बोली अजब ढङ्गकी है। लेकिन यहांकी भी दो चार बोलियां वह सीख गया है। दो पैरसे सीधा चलता है—वह पालतू और सीधा है—बुलानेसे आताऔर कहनेसे सब काम करता है। देखनेमें बहुत सुन्दर और रङ्ग भी गोरा है।" इस बातकी जांचके लिये एक मनुष्य जो किसानका दोस्त और पड़ोसी था आया। किसानने मुझको लाकर मेज पर खड़ा कर दिया। उनके कहनेसे दो चार कदम चला, खञ्जर निकाल कर घुमाया और फिर रख लिया। उन्हींकी भाषामें उनका स्वागत किया। यह सब मैंने अपनी दायासे सीखा था। इसके बाद वह चश्मा लगाकर मुझको भली भांति देखने लगा। उसके दोनों नयन दो चन्द्रमाओंके समान दो झरोखोंमेंसे चमकते मालूम हुए। मैं इस दृश्यको देख कर हंसी रोक न सका। मुझको हंसते देख सब कोई हंस पड़े। इस पर बूढ़ा बहुत नाराज हुआ और बन गया। यह परले सिरेका कञ्जूस और लोभी था। मेरे लिये तो साक्षात् साढ़े साती शनिश्चर था। उसने किसानको मेरे द्वारा धन उपार्ज्जन करनेकी सम्मति दी। जब यह दोनों मेरी ओर निश्चर निहार कर आपसमें बातचीत करने लगे तो मेरा माथा ठनका। मैंने समझ लिया कि कोई भारी विपद आनेवालीहै। दूसरे दिन सवेरे दायाने सब वृत्तान्त अपनी मातासे सुन कर मुझको बता दिया। वह बिचारी मुझको गले लगा कर रोने लगी और बोली "मैंने तो समझा था कि तू मेरे पास रहेगा सो नहीं हुआ। पारसाल मैंने एक मेम्ना पाला था जब बड़ा हुआ तो बाबाने उसे कसाईके हाथ बेच दिया। बाबा कभी कोई चीज मेरे पास नहीं रहने देते हैं। न जाने हाटमें तेरी क्या दुर्दशा होगी।" पर मुझको किसी बात

की चिन्ता न थी। मुझको पूरा भरोसा था कि कभी न कभी इस फन्देसे मैं अवश्य छूट जाऊंगा। मैंने सोचा अगर इङ्गलंडेश्वर भी यहां आते तो उनकी भी यही दशा होती फिर मेरी क्या गिनती है?

किसानने अपने मित्रकी सम्मतिके अनुसार हाटके दिन नगराभिमुख प्रस्थान किया। मुझको एक पिञ्जड़ेमें बन्द करके आगे रख लिया और दायाको अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया। पिञ्जड़ेकी बनावट सन्दूक कीसी थी। इसमें हवा आने जानेके लिये दो चार छेद तथा एक द्वार बना हुआ था। दायाने मेरे लिये एक छोटीसी गद्दी भी बिछा दी थी। अस्तु, हम लोग ठिकाने पर पहुँचे। आधेही घण्टेमें बाईस कोसकी मञ्जिल पूरी हुई। हरारतसे मेरे तो बन्द बन्द टूटतेथे क्योंकि घोड़ा बराबर सरपट दौड़ता आया था। इसके एक एक कदम चालीस चालीस फुट पर पड़ते थे। किसानने एक सरायमें डेरा जमाया। वह प्रायः यहीं उतरा करता था। सरायवालेसे सब ठीक ठाक करके उन्होंने विज्ञापन निकलवाया कि एक अजीब जानवर आया है जो छः फुट लम्बा और बहुत सुन्दर है। सूरत आदमीसी है। बोलता है और बहुत से अद्भुत काम करता है जिसको देखना हो सरायमें आवे।

सरायके एक बड़े कमरेमें जो तीनसौ वर्ग फुटका था एक मेज पर मैं खड़ा किया गया दाया पासही एक तिपाई पर निगरानी तथा तमाशा दिखानेके निमित्त बैठी। किसान दरवाजे पर खड़ा हुआ। जिसमें गोलमाल न हो इसलिये तीस तीस आदमियोंको बारी बारीसे भीतर भेज देता था। दायाके कहनेसे मैं मेज पर चलता था। जो कुछ वह पूछती उसका मैं जवाब देताथा। आने वालोंका स्वागत तथा स्वास्थ्यापान करता था। तलवार निकाल कर कलाबाजी दिखाता और न जाने क्या क्या दिखाता था। दाया उतनेही प्रश्न करती थी जितने मैं समझता था। इसी तरह उस दिन मैंने १२ भुण्डके सामने अपना तमाशा दिखाया। मैं थक कर अधमुआ होगया। जिन लोगोंने देखा उन्होंने इतनी प्रशंसाकी

कि सारा शहर सरायमें टूट पड़ा और सब दरवाजा तोड़ कर भीतर घुसनेके लिये तैयार होगये। दायाको छोड़ कोई दूसरा मुझे छू नहीं सकता था। दर्शकगण भी इतनी दूर रहते थे कि उनके हाथ मुझ तक नहीं पहुंच सकते थे। यह सब प्रबन्ध किसान ने केवल अपने लाभके निमित्त कर रक्खे थे। इतने पर भी स्कूल का एक शैतान छोकड़ा बादाम खेंच कर मुझको मारही बैठाथा। कुशल हुई नहीं तो मेरी खोपड़ी फट जाती। यह बादाम लौकी के बराबर था। आखिर वह छोकड़ा खूब पीटा गया और निकाल दिया गया।

हाट बन्द हुई। हम लोग भी घर वापिस आये। अबके किसान ने मेरे आरामके लिये बढ़िया सवारीका प्रबन्ध किया। इस आठघण्टेकी कड़ाचूर मेहनतसे मुझको ज्वर हो आया। उठने बैठनेकी ताब न रही। तीन दिन तक बेसुध पड़ा रहा। चौथे दिन होश हुआ पर हाय! घर पर भी मुझको चैन नहीं! देखने वाले झुण्डके झुण्ड घर परही आने लगे। एक दिन तीससे अधिक सज्जन सपरिवार पधारे। किसानने सबसे पूरा दाम वसूल किया था। आस पासके अर्थात् सौ मील तकके लोग मुझको देखने आये। किसानके घर रुपयोंकी वर्षा होने लगी। मुझको बुद्धवार के सिवा कभी मरनेको भी छुट्टी नहीं मिलती थी। बुद्धवारही इन लोगोंका रविवार अर्थात् विश्रामका दिन था।

किसानको अब रुपयेकी चाट लगी। उसने मुझको बड़े बड़े शहरोंमें घुमानेका सङ्कल्प किया आखिर सब सामानसे लैस होकर वह १७ वीं अगस्त १७०३ ईस्वीको राजधानीके लिये उठ खड़ा हुआ। यह राजधानी वहांसे तीन हजार मील दूर थी। दाया भी साथ चली। सवारीमें वही घोड़ा था। मैं अपने पिञ्जड़ेमें था और दाया इसे लिये हुए थी। मेरे आरामकी सब सामग्री पिञ्जड़े में मौजूद थी। चीज वस्तुकी देख भालके लिये साथमें एक छोकड़ा भी था।

किसानने रास्तेके निकटके प्रत्येक शहर और गांवमें तमाशा दिखा कर रुपया बटोरना विचारा था परन्तु दायाकी राय न हुई। उसने कहा "ऐसा करनेसे ग्रिलड्रिग बीमार होजायगा और मैं भी घोड़े पर चलनेसे थक जाती हूं—बहुत भारी मञ्जिल करना ठीक नहीं।" मञ्जिल हलकी होने लगी। एकसौ चालीस पचास मील परही पड़ाव पड़ने लगा। हवा खिलाने तथा देशकी सैर करानेके लिये दाया अकसर मुझको बाहर निकालती परन्तु बराबर कसके थामे रहती थी। छ: सात नदियां हम लोगोंने लांघी। सब गङ्गा और नील नदीसे गहरी तथा बड़ी थी। टेम्ससी छोटी नदी वहां एक भी नहीं मिली। रास्तेमें दस सप्ताह लगे थे। दाया के मना करने पर भी मैं कोई अठारह बड़े बड़े शहरों तथा कई छोटे छोटे गांवोंमें दिखाया गया था।

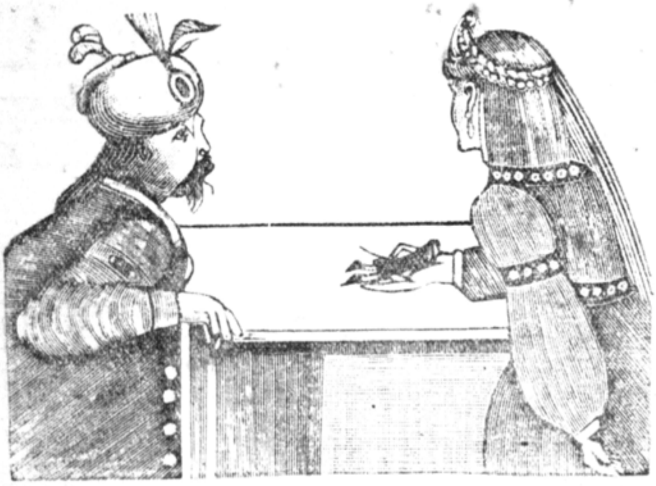
२६ वीं अक्तूबरको हम लोग राजधानीमें जा पहुंचे। इसका नाम "लर वरलग्रड" है। इस नामका अर्थ है "विश्वगौरव"। किसानने राजभवनके समीपही नगरके प्रधान मुहल्लेमें एक मकान किराये पर लिया। फिर विज्ञापन निकाला गया। इसमें मेरा पूरा वर्णन था। चारसौ फुट लम्बे चौड़े कमरेमें एक बड़ी मेज रक्खी गई। इसका व्यास ६० फुट था और इसके चारों ओर लोहे का कठहरा तीन फुट ऊंचा लगा हुआ था। इसी मेज पर मुझको तमाशा करना पड़ता था। मैं दस बार दिनमें दिखाया जाता था। दर्शकगण भी देखकर आश्चर्य तथा आनन्द प्रगट करते थे। किसान का हाथ गरम होताथा। अब मैं उस देशकी भाषाको भी भली भांत बोलने तथा समझने लग गया था। दाया जेबमें छोटीसी एक पोथी धर लाई थी उसीको मैं पढ़ता था। यह सेमसन साहबके एटलासके बराबर थी।

चतुर्थ परिच्छेद।

किसानकी आमदनी ज्यों ज्यों बढ़ने लगी त्यों त्यों उसका लालच भी बढ़ चला। वह मुझसे दिन भर मिहनत लेने लगा।

फल यह हुआ कि थोड़ेही दिनोंमें मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया भूख मन्दी पड़ गई और शरीर सूख कर कांटा होगया। किसानने मेरी मौत निकट समझ और भी हाथ साफ करना चाहा। उसने विचारा अब जो कुछ मिल जाय वही नफा है। इसी बीचमें महारानीके यहांसे बुलाहट आगई। किसान भी लालचके मारे उठ खड़ा हुआ। महारानी मेरी आकृति तथा खेल तमाशा देख कर बहुतही प्रसन्न हुई। महारानीने हाथ बढ़ा दिया मैंने सादर उसका चुम्बन किया। फिर उन्होंने मेरे देशका वृत्तान्त तथा सफर का हाल वगैरः पूछा। मैंने जहां तक बना स्पष्ट रूपसे सब कह सुनाया। महारानीने पूछा "क्या तुम मेरे पास रह सकतेहो?" मैंने सलाम करके जवाब दिया "मैं इस समय किसानका गुलाम हूं। अगर स्वाधीन होता तो श्रीमतीकी सेवामें रहना अपना सौभाग्य समझता।" महारानीने तब किसानसे पूछा। किसानने तो जानलिया था कि मैं दो चार दस दिनमें मर जाऊंगा इससे उसने मुझको बेचनाही उचित समझा अन्तको उसने मुझे हजार अशर्फियोंमें महारानीके हाथ बेच डाला। जब किसान अशर्फियां लेकर जाने लगा तब मैंने महारानीसे दायाके रखनेके लिये प्रार्थना की और कहा इसके रहनेसे मुझे बहुत आराम मिलेगा। महारानीने मेरी बात मानली। तब किसानही क्यों उजर करने लगा था? राजदरबारकी नौकरी बड़े भाग्यसे मिलती है। बिचारी दाया भी खुशीके मारे फूल कर कुप्पा होगई। किसान सलाम करके मुझसे बोला "लो तुम्हें अच्छी जगह पहुँचा कर मैं जाता हूं।" मैंने सलामके बदले सिर्फ सलाम किया पर कुछ कहा नहीं। किसान भी अशर्फियोंकी गठरी ले चलता हुआ।

किसानके चले जाने पर महारानीने मेरी रुखाईका कारण पूछा। मैंने कहा "किसानने जब मुझे खेतमें पाया तो मेरी खोपड़ी चूर चूर नहीं करदी बस इतनाही उपकार इसने मेरा किया है। सो इस उपकारके बदले वह बहुत धन उपार्ज्जन कर चुका है। अभी



नं० ८

मैं महारानीकी दाहिनी हथेली पर पट पड़ाया।

पृष्ठ ८३

यहांसे भी हजार मुहरें लेगयाहै। अब मैं उससे उऋण हूं। जितना परिश्रम वह मुझसे करवाता था उतना परिश्रम करके मुझसे दस गुने बलवाले जीव भी नहीं जी सकते हैं मैं अब तक जीवित हूं यही आश्चर्य है। मेरी सारी देह गल गई है। यदि वह मेरी मृत्यु निकट न समझता तो इतने सस्ते दाममें श्रीमती मुझे कदापि न पातीं। अब मैं श्रीमती जैसी दयाशील, सृष्टि भूषण, विश्वप्रिया, आयुष्मती महिषीकी शरणमें आया हूं पूर्ण आशा है कि अब मैं सुखसे आनन्द पूर्वक अपना समय बिताऊंगा।"

मेरी बातें सुन कर महारानीको हर्ष तथा आश्चर्य हुआ। वह हाथमें उठा कर मुझे महाराजके निकट लेगई। महाराज शयनागारमें थे। महाराजका चेहरा दृढ़ और गम्भीर था। मैं महारानीकी दाहिनी हथेली पर पट पड़ा था। महाराज मुझे भली भांति न देख सके थे—पूछा "यह चिड़िया कबसे पालीहै?" महारानी बड़ी बुद्धिमती थीं उन्होंने चट मुझको मेज पर खड़ा करदिया और सारा वृत्तान्त महाराजसे निवेदन करनेके निमित्त कहा। मैंने बहुत थोड़े शब्दोंमें अपनी राम कहानी कह सुनाई। दाया द्वार पर खड़ी थी। वह भी भीतर बुलाई गई। उसने पूरा हाल कह सुनाया। उस बेचारीको मेरे देखे बिना चैन कहां?

महाराजकी विद्याका वहां बहुत कुछ नाम था। आप गणित और विज्ञानमें पारंगत थे किन्तु मेरा ढङ्ग देख कर आपकी भी बुद्धि चकरा गई। आपने अपनी विद्या और बुद्धिके प्रतापसे मुझे कलका पुतला या किसी घड़ीका पुरजा समझा परन्तु जब मेरी बोली मेरा उच्चारण प्रभृति सुना तो आपको बहुतही अचम्भा हुआ। मेरी बातोंका विश्वास आपको नहीं हुआ। श्रीमान्ने फिर कई प्रश्न किये मैंने सबका सार्थक और स्पष्ट उत्तर दिया। इन वाक्योंमें वही दोष थे जो विदेशीसे उच्चारण वा मुहाविरेमें होसकते हैं। पर एक बात और है—भाषा मेरी गंवारी थी क्योंकि किसानहीके घर मैंने शिक्षा पाई थी।

महाराजने तीन पण्डित बुलवाये। इन लोगोंने मुझको खूब अच्छी तरह देख भाल कर अपनी जुदी रायदी। यह तो सभीने माना कि मैं स्वाभाविक नियमसे उत्पन्न नहीं हुआ हूं और न मेरी बनावटही ऐसी है कि मैं तेज चल कर, वृक्ष पर चढ़ कर और बिलमें रह कर अपने प्राणको बचा सकूं। दांतोंकी परीक्षा कर उन लोगोंने मुझको मांस खानेवाला जानवर ठहराया पर इसमें यह असमंजस आपड़ा कि चौपाये सबही मुझसे बहुत बड़े हैं उनका मांस खाना मेरे लिये असम्भव है। पीछे यह सिद्धान्त हुआ कि मैं कीड़े मकोड़े खाता हूं। एक पण्डितने मुझको अकाल प्रसूत बताया पर दूसरेने उसका खण्डन किया। कहा "ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि इसके अङ्ग सब पूरे हैं। जो असमय उत्पन्न होता है उसके अङ्ग अधूरे होते हैं और वह जी नहीं सकता है।" इन बुद्धिमानोंकी रायसे मैं बौना भी नहीं था क्योंकि मैं बहुतही छोटा हूं। महारानीका प्यारा बौना अत्यन्त ठिङ्गना होने पर भी ३० फुट लम्बा था। शेषमें मैं एक अद्भुत जीव समझा गया।

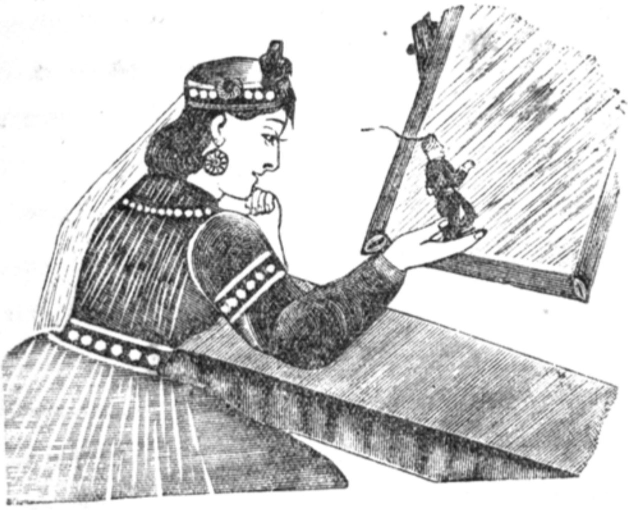
यह सब होजाने पर मैं हाथ जोड़ कर बोला "महाराज! मैं जिस देशका हूं उस देशमें करोड़ों स्त्री पुरुष इसी डील डौलके हैं। जीव जन्तु, पेड़ पत्ते, घर द्वार प्रभृति भी इसी परिमाणके हैं। मौका पड़ने पर हम लोग अपनी रक्षा कर सकते हैं। जैसे यहांके लोग सब काम कर सकते हैं वैसे हम लोग भी वहां करते हैं? मेरी बात सुन कर सब मुंह बिचकाके हंस पड़े और बोले "किसानने इसको अच्छा सबक पढ़ाया है।" महाराज सबसे बुद्धिमान थे। पण्डितों को बिदा करके उन्होंने किसानको बुलाया। भाग्यसे किसान उस समय तक शहरहीमें था। वह हाजिर किया गया! महाराजने एकान्तमें उससे कुछ पूछा फिर इकट्ठा कर सबका इजहार लिया। अब उन्हें मेरी बातोंका कुछ कुछ विश्वास होने लगा। महाराजने मुझे महारानीके सपुर्द किया और यत्नपूर्वक रखनेके लिये कहा।

मेरा प्रेम दायासे देख कर दायाको भी रहनेके वास्ते हुक्म दिया। एक कमरा उसके रहनेके लिये दिया गया। उसके लिखाने पढ़ाने के वास्ते एक गुरुआनी नियतकी गई। सेवा टहलके लिये दासियां मिलीं। लेकिन मेरे लालन पालनका भार दायाहीके सिर रक्खा गया। महारानीने अपने खास बढ़ईको पिंजरा बनानेकी आज्ञा दी। यह बड़ा सुघड़ कारीगर था। इसने मेरे कहनेके अनुसार तीन सप्ताहमें लकड़ीका एक सुन्दर पिंजरा बना दिया। यह सोलह फुट लम्बा, सोलह फुट चौड़ा तथा बारह फुट ऊंचा था। इसमें खिड़कियां, दरवाजे और अगल बगल दो छोटी छोटी कोठरियां थीं। ऊपर तख्तेबन्दी थी। इसमें एक द्वार भी था जो चूलके सहारे खुलता और बन्द होता था। दिनमें बिछौने आदिको धूप खिलानेके लिये दाया दरवाजा खोल देती और रात को बन्द कर देती थी। कहनेके लिये तो पिञ्जरा था पर वास्तवमें यह खासा कमरा था, एक चतुर बढ़ईने जिसका छोटी छोटी चीजें बनानेमें बड़ा नाम था। दो कुर्सियां तथा मेज बना दी थीं। चीज वस्तु रखनेके वास्ते एक सन्दूक भी बना दिया था। यह सब ठीक हाथीदांतकेसे मालूम पड़ते थे। जिसमें मुझे कष्ट न हो इस लिये मेरे घरके चारों ओर ऊपर नीचे तमाम रूईकी मोटी गद्दी मढ़दी गई। दरवाजेमें छोटासा एक ताला लगाया गया। यह फरमाइश देकर बनवाया गया था। इतना छोटा ताला वहां पहले और कभी किसीने नहीं देखा था। लेकिन मेरे लिये तो वह महाताला था। दायासे शायद खोजाय इसलिये मैंही चाभीको अपने पास रखता था। सबसे महीन रेशमी कपड़ेकी पोशाक मेरे लिये बनी। यह कपड़ा विलायती कम्मलके समान मोटा था। यह पोशाक उसी देशके ढङ्गकी थी। इन लोगोंका पहरावा कुछ पारसियोंसे और चीना लोगोंसे मिलताथा परन्तु देखनेमें सुन्दरथा।

महारानी अब मुझे इतना चाहने लगीं कि बिना मेरे वह भोजन नहीं करतीं उनकी बाईं ओरमेरी मेज कुर्सी लगती थी और पासही

तिपाई पर दाया हिफाजतके लिये बैठती थी। मेरे लिये चान्दीके छोटे छोटे वर्त्तन मंगाये गयेथे। दाया इन्हें अपनी जेबमें रखतीथी। जब मैं मांगता तो साफ करके देती। महारानीके पात्रोंके आगे यह लड़कींके खिलौनेसे मालूम होते थे। महारानीके सङ्ग दोनों राजकुमारियोंके सिवा और कोई नहीं खाता था। इनमेंसे एक तो सोलह और दूसरी तेरह बरसकी थी। महारानी मांसका एक टुकड़ा मेरी रकाबीमें डाल देती मैं उसे काट काट कर खाता और वह तमाशा देखती थीं। महारानी बहुत कम खाती थीं पर हमारे यहांके दस बारह कुली मजूरोंकी पूरी खुराक आपका एकही निवाला था। इस अन्धाधुन्ध खानेको देख मेरा जी घबरा उठा था। वह समूचे लवापक्षीको चबा जाती थीं। लवाको सहज मत समझना—यह हमारे देशके पेरूसे नौगुने बड़े होते थे। सोनेके प्याले में वह एक पीपा शराब एकही घूंटमें सोख जाती थी। महारानीकी छुरी तीन हाथ लम्बीथी। चम्मच, कांटे प्रभृतिका अनुमान इसीसे कर लीजिये। मुझे याद है एक दिन मैं दायाके साथ बादशाही कमरेमें जहां स्वयं महाराज भोजन करते थे योंहीं चला गया वहां ऐसी ऐसी दस बारह छुरियोंको एक साथही उठते देखा था। ऐसा भयानक दृश्य फिर कभी देखनेमें नहीं आया।

मैं कही चुका हूं कि बुधवार इन लोगोंका विश्राम दिन है। इस दिन महाराज सपरिवार बैठ कर भोजन करते हैं। अब मेरी भी छोटी छोटी मेज तथा कुर्सियां महाराजकी बाईं तरफ लगने लगीं। महाराज मुझे बहुत चाहते या तथा मेरी बात सुनकर बहुत प्रसन्न होते थे। आप युरोपके आचार व्यवहार, धर्म्म कर्म्म, रीति नीति, विद्या बुद्धि और आईन कानूनके बारेमें बराबर पूछते थे। मैं सबका यथोचित उत्तर देता था। महाराजकी समझ बहुत अच्छी थी। कभी कभी वह अपनी भी राय प्रगट करते थे। मैं अपने प्यारे देशके व्यापार, युद्ध, धर्म्मानुराग, इत्यादिकी बातें खूब बढ़ा बढ़ा कर गौरवके साथ कहता था। ह्वीग (प्रजाहितैषी)



नं ९

जब महारानी हाथमें उठाकर मुझे आईनेके सामने कर देती तो मैं मारे ग्लानिके मरजाता। हाय ! मैं इतना छोटा क्यों हुआ।

पृष्ठ ८७

और टोरी (राजानुयायी) दलोंका जब मैं वर्णन करता तो महाराज मुझे हाथमें उठा लेते और मुसकुरा कर पूछते "अरे तू किस दलका है ?" फिर प्रधान मन्त्रीसे जो वहीं पीछे खड़ा रहता था कहते "देखो ! मनुष्यके सब ठाठ बाट कैसे घृणित हैं ! एक अदना कीड़ा भी इनकी हंसी उड़ा सकता है। इसके देशमें भी पदवियां बटती हैं तथा मान सम्मान होता है ! इसके देशवाले भी कपड़े पहनते हैं तथा सवारियों पर चढ़ते हैं ! यह छोटे छोटे घोसलें और बिलको अपना शहर बतलाता है। यह सब भी प्यार करना जानते हैं यह भी लड़ते हैं, ठगते हैं और दूसरेके भेदोंको प्रकाश करते हैं !" जब महाराज इस प्रकार बोलते तो मारे गुस्सेके मेरा चेहरा लाल होजाता। हमारे उस देशकी जो आज कल शिल्प, विज्ञान और अस्त्र शस्त्रका आकर है—फरांसका भय स्थान है—जो सारे युरोपका मध्यस्थ है—जो सत्य, धर्म्म, दया, और सम्मानका स्थल है और जो सम्पूर्ण जगत्का गौरव माननीय है;—निन्दा इस तरह हो !

खैर, मैं अपनी अवस्था विचार कर चुप होरहा लेकिन मनमें बहुत बुरी लगी। कुछ दिन उन लोगोंके साथ रहने तथा वहांकी विलक्षण वस्तुएं देखनेसे मेरा डर भय सब जाता रहा। उन दिनों मेरा मन ऐसा होगया था कि अगर कहीं आप लोगोंको देख पाता तो मैं आप लोगोंकी क्षुटाई पर बहुत हंसता और उतनाही अचरज करता जितना कि इन विराट पुरुषोंने मुझे देख कर कियाथा। जब महारानी हाथमें उठा कर मुझे आइनेके सामने कर देती तो मैं मारे ग्लानिके मर जाता। हाय मैं इतना छोटा क्यों हुआ !

मैं कह चुका हूँ कि महारानीके एक बौना भी था। यह बौना होने पर भी तीस फुट लम्बा था। इसे देख कर न जाने क्यों मेरा जी कुढ़ जाता था। वह भी मेरे जैसे तुच्छ जीवको देखकर घमण्ड करता था। जब वह मेरे सामने आता तो अकड़ कर चलता। मेज पर खड़े होकर जब मैं राव उमराओंसे बोलता तब दुष्ट मेरी

कुटाई पर ताने मारता। मैं उसे भाई पुकारता और कभी कभी कुश्ती लड़नेके लिये हंसीसे ललकारता भी था। एक दिन भोजन के समय बातही बातमें वह बिगड़ बैठा और मुझे मलाईसे भरे हुए कटोरेमें पटक कर लम्बा हुआ। मैं सिरके बल गिर पड़ा। अगर तैरना न जानता होता तो बड़ी मुश्किल होती। दाया भी संयोगसे वहां मौजूद न थी। महारानी डरके मारे घबरा गई थीं। आखिर दायाने दौड़ कर मुझे निकाल लिया। इतनेहीमें बहुतसी मलाई मैं खागया था। चोट सोट तो कुछ लगी नहीं पर कपड़े सब खराब होगये थे। वामनजी पकड़ कर लाये गये और कोड़ेसे उनकी खूब खबर लीगई। वही मलाई जिसमें मैं पटका गया था सजाके बतौर उन्हें खिलाई गई। महारानी उनसे बहुत अप्रसन्न होगईं। उसी समय वह दरबारसे निकाले गये। मैं बड़ा खुश हुआ। अगर वह रहता तो न जाने फिर क्या आफत मचाता।

एक बार पहले उसने एक और भद्दी दिल्लगी कीथी। महारानी बहुत हंसी पर साथही बहुत गुस्से भी हुईं। अगर मैं सुफारिश न करता तो वह उसी दिन निकाल दिया जाता। महारानी ने चरबी निकाल कर हड्डीको खड़ा कर दिया था। वामनजी महाराजने मौका पा मुझे उस हड्डीके भीतर कमर तक घुसेड़ दिया। मैं एक घड़ी तक उसी तरह खड़ा रहा। शरमके मारे किसीको पुकारा भी नहीं। आखिर मैं निकाला गया। वामनजी को उस दिन भी कोड़े लगे थे।

मेरी भीरुता पर महारानी प्रायः ताना मारतीं और कहतीं "क्या तुम्हारे देशमें सभी ऐसेही बुजदिल और डरपोंक हैं?" इसका कारण सुनिये। गर्मीमें मक्खियां वहां बहुत सताती हैं। यह मक्खियां ऐसी वैसी नहीं अगन चिड़ियाके बराबर होती हैं। जब मैं खानेको बैठता तो ये कानके पास आकर भन भन करतीं और बहुत तङ्ग करती थीं। कभी कभी खानेकी चीजों पर बैठ कर हग देतीं। वहांके लोगोंको वह बीट दिखाई नहीं पड़ती क्योंकि

उनकी आंखें बड़ी थीं लेकिन मेरे रामको तो सब साफ मालूम होता था। कभी नाक या माथे पर बैठ कर ऐसा डङ्क मारतीं कि मैं बेताब होजाता। इसीसे इन मक्खियोंसे मैं बहुत डरता था। जब यह भिनभिनातीं तो मैं चौकन्ना होजाताथा। वामनजी मक्खियां पकड़ कर अकसर मेरे मुँहके आगे छोड़ दिया करते थे। मैं बड़ी फुर्तीसे उनके दो टुकड़े कर डालता था। मेरी इस फुर्तीकी बहुत तारीफ होती थी।

एक दिन सवेरे दायाने पिञ्जरेको झरोखे पर रख दिया। मैं भी आफतका मारा पिञ्जरेका किवाड़ खोल कर मिठाई कलेवा करने लगा। सोठेकी गन्धसे बीसियों भिड़ें घुस आईं। कुछ तो मेरी मिठाई उठा लेचलीं और कुछ मुँहके सामने भिनभिनाने लगीं। मैं मारे डरके घबरा गया। लाचार होकर मैंने कटारी निकाली। चारको उसी दम काट गिराया बाकी भाग गईं। फिर मैंने द्वार बन्द कर दिया। यह भिड़ें तीतरके समान थीं। फिर मैंने इनके डङ्क निकाले। यह डेढ़ डेढ़ इञ्च लम्बे थे तथा सूईसे पैने थे। उन्हें मैंने बड़ी हिफाजतसे रख लिया। विलायत लौट कर सबको दिखलाया। तीन तो एक स्कूलमें दे दिये और एक अपने पास रक्खा।

पञ्चम परिच्छेद।

अब मैं इस देशका कुछ संक्षेप वर्णन पाठकोंको सुनाया चाहता हूं। राजधानीके आस पास कोई दो हजार मील तक मैं घूम आया हूं। महाराज तो सीमा प्रान्त तक जाते थे परन्तु महारानी इससे आगे कभी गई नहीं और मैं बराबर महारानीहीके सङ्ग रहताथा। इस देशका नाम ब्रोवडिगनेग है तथा इसकी राजधानीका नाम है लर ब्रलग्रड। यह राज्य लग भग ६००० हजार मील लम्बा तथा चार पांच हजार मील चौड़ा है। अतएव मैं कहता हूं कि हमारे भूगोल वेत्तागण बहुत भूलते हैं। वह कहते हैं कि जापान और

कालीफोर्नियाके बीचमें समुद्रके सिवा और कुछ नहीं है। पर मेरी राय सदासे इसके विरुद्ध थी। परमात्माके अनुग्रहसे मेराही विचार ठीक निकला। अब इस महादेशको अमेरिकाके पश्चिमोत्तर भाग से संयुक्त कर भूचित्र इत्यादिका पुन: संशोधन करना चाहिये। मैं इस विषयमें बहुत कुछ सहायता दे सकता हूं।

यह देश एक प्रायद्वीप है। इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर तीस मील ऊंची पर्व्वत माला है। यह सब ज्वालामुखी पर्व्वत हैं और यह स्थान भी ऐसा विकट है कि कोई उसपार जा नहीं सकता बड़े बड़े पण्डित भी नहीं बतला सकते कि पर्व्वतोंके परलेपार क्या है। शेष तीन दिशाओंमें महासागर लहरें मारताहै। इस देशमें नामके लिये भी कोई बन्दरगाह नहीं है। समुद्रके किनारे जहां नदियां गिरतीं हैं इतने नुकीले ढोंके बिखरे हुए हैं तथा समुद्रमें तूफानका इतना जोर रहता है कि वहां किश्ती चलाना बहुतही कठिन है। इसी हेतु यहांके निवासी अन्यान्य देशोंसे वाणिज्य व्यापार करनेमें पूरे असमर्थ हैं। बड़ी बड़ी नदियोंमें जहाज देखे जाते हैं। इन नदियोंमें बहुत बढ़ियां मछलियां होती हैं। यहां वाले इन मछलियोंको बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि समुद्रकी मछलियां वैसीही होती हैं जैसे हमारे देशकी। इसलिये छोटी समझ कर यह लोग समुद्रकी मछलियोंको नहीं पकड़ते। इससे प्रकट होता है कि प्रकृतिने यह सब विलक्षण बड़ी बड़ी चीजें इसी देशके वास्ते सिरजी हैं। दूसरी जगह ऐसी चीजें क्यों नहीं होतीं इसका विचार विज्ञानी लोग करेंगे।

यह देश खूब आबाद है। इसमें ५१ बड़े बड़े नगर तथा सौके लग भग नगर कोटवाले शहर हैं। छोटे छोटे गांवोंकी तो गिनती नहीं। अब "लार ब्रलग्रड" का वर्णन सुनिये। बीचसे एक नदी बह गई है इसीके दोनों तीर पर राजधानी बसी हुई है। इसमें प्राय: अस्सी हजार घर तथा छ: लाख मनुष्य बास करते हैं। यह चौअन मील लम्बा तथा ४५ मील चौड़ा है।

राजाका महल ठीक महलके कायदेका तो था नहीं पर एक मीलके घेरेमें बहुतसे मकानोंका ढेर मालूम होता था। बड़े बड़े कमरेकी ऊंचाई दोसौ चालीस फुट थी। बस इसी अन्दाजसे लम्बाई और चौड़ाई भी समझ जाइये। हम लोगोंको एक गाड़ी मिली थी। इसी पर नगर देखनेको हम लोग जाया करते थे। मैं तो पिञ्जरेमें रहता था—हां पिञ्जरा अलबत्ते गाड़ी पर रख लिया जाता था। कहनेसे दाया कभी कभी हाथ पर भी ले लेती थी। तभी बाजारकी सब चीजें मजेमें दिखलाई पड़ती थीं। एक दिन एक दूकानके सामने गाड़ी खड़ी हुई। वहां बहुतसे भिखमङ्गे जमा थे। वह सब मौका अच्छा देख गाड़ीको घेर कर खड़े होगये। वैसा भयानक दृश्य युरोपवालोंने कभी काहेको देखा होगा। उस भीड़में एक स्त्रीको देखा जिसकी छातीमें नासूर था जो फूल कर बहुत बड़ा होगया था। उसमें कई छेद थे। दो तीन छेद तो इतने बड़ेथे कि उनमें घुसकर मैं मजेमें छिप जा सकता था। एक आदमीकी गर्दन पर एक फुन्सी देखी। यह पांच बस्ता ऊन (पशम) से भी बड़ी थी। एक आदमीके पैर दोनों कटे थे। लकड़ीके पांव लगे थे सो बीस बीस फुट लम्बे थे। सब से अधिक घृणा तो उन लोगोंके कपड़ों पर चीलड़ोंको रेंगते हुए देख कर हुई। इन चीलड़ोंके थुथने सूअर जैसे थे। इस घृणित दृश्यको देख कर मेरा जी घबरा गया था।

जिस पिञ्जरेमें अब तक मैं बाहर लेजाया जाता था वह बहुत बड़ा था। दायाको इसके धरने उठानेमें बड़ी तकलीफ होती थी इसके सिवा गाड़ी पर भी रखनेमें बड़ी अड़चल पड़ती थी इससे महारानीने एक दूसरा छोटा सफरी पिञ्जरा बनवाया। यह दस फुट ऊंचा, बारह फुट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा था। इसके तीन ओर बीचमें तीन खिड़कियां थीं जिनमें बाहरसे लोहेके तार की जाली मढ़ी हुई थी। चौथी तरफ जिधर खिड़की न थी दो मजबूत कीड़े लगे हुए थे। इन्हींमें कमरबन्द पिरो कर सवार लोग

कमरसे पिञ्जरेको बांध लेते और सामने घोड़े पर रख लेते थे। एक झूला छतसे लटकता था। एक मेज और दो कुर्सियां पेचसे कसी हुई थीं। इस पिञ्जरेसे मुझे बहुत आराम मिला। जब कभी दायाको अवकाश नहीं मिलता तो कोई विश्वासी आदमी पिञ्जरे समेत मुझे घोड़े पर अपने आगे रख लेता और शहरकी सैर करा देता था। जिधरसे मेरी सवारी निकलती थी उधर एक मेलासा लग जाता था।

यहां एक बहुत सुन्दर मन्दिर है। इसका गुम्बज इस देशके सब मन्दिरोंसे ऊंचा है। इसके देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई। आखिर दायाके साथ एक रोज वहां मैं गया। जितना ऊंचा इसे मैंने समझा था उतनाही पाया। यह तीन हजार फुटसे ज्यादा ऊंचा न था। यहांके मनुष्य जितने लम्बे होते हैं उस हिसाबसे तो यह कुछ भी ऊंचा न था। हम लोगोंके डौलके ख्यालसे विलायतमें इससे ऊंचे ऊंचे मकान हैं। जो हो, मन्दिर बहुत सुन्दर और मजबूत बना हुआ था। इसकी दीवार सौ फुट चौड़ी थी। यह पत्थरका था। चालीस चालीस फुटके पत्थर इसमें लगे थे। देवी देवता तथा महाराजाओंकी बड़ी बड़ी मूर्त्तियां लगीथीं जो सब सङ्गमरमरकी थीं। एक मूर्त्तिकी एक उंगली टूट कर गिर पड़ी थी। मैंने उठाकर नापी तो चार फुट हुई। दाया मेरे खेलने के लिये उसे घर उठा लाई थी।

महाराजकी पाकशाला सचमुच सुन्दरथी। इसका चूड़ा करीब छः सौ फुट ऊंचा था। चूल्हे भी बहुत बड़े बड़े थे। रसोई घरके वर्त्तन भांड़ेका पूर्ण वर्णन करनेके लिये यदि मैं बड़ी बड़ी वस्तुओंकी उपमा दूंगा तो पाठक मुझे झूठा समझेंगे और उधर कहीं यह पुस्तक ब्रोवडिगनेगकी भाषामें अनुवादित होगई तो महाराज तथा वहांके निवासीगण अपनी वस्तुओंकी हीन उपमा देख कर बुरा मानेंगे। इसलिये इस विषयको मैं यहीं समाप्त कर देता हूं।